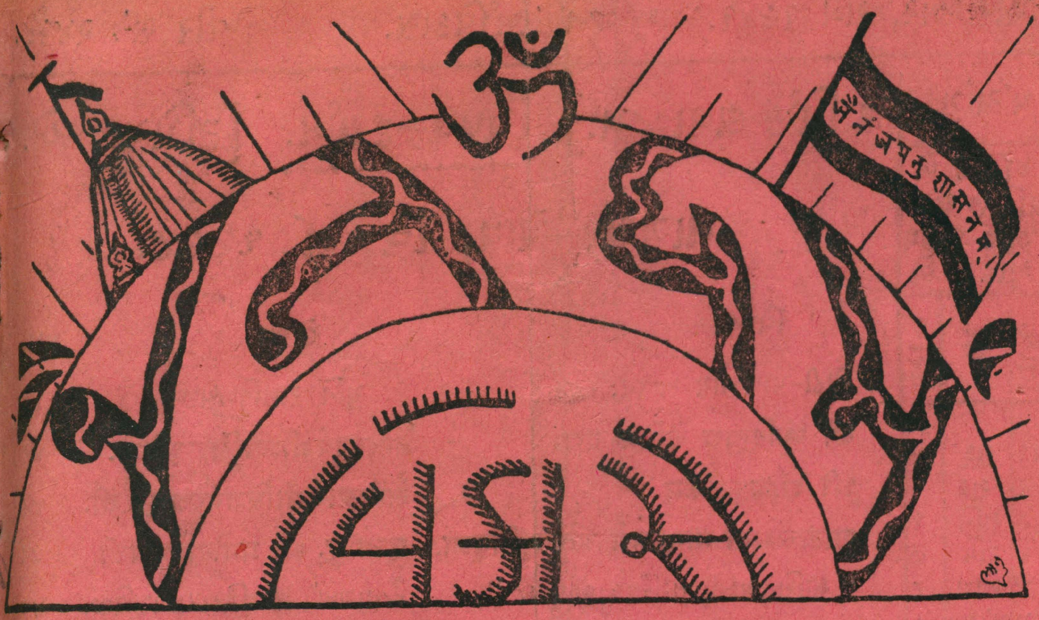

પુસ્તક ૨ જું.] માગશર : વીર સંવત ૨૪૬૮. [અંક ૨

શ્રીમદ્ પન્યાસરત્ન [illegible] વિજયજી મહારાજ

તંત્રી :

લક્ષ્મીચંદ પ્રેમચંદ શાહ. ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ.

પંચાંગ.

વદિ ૪ બે
વદિ ૭ ક્ષય
શુદિ ૬ ક્ષય
શુદિ ૭ બે

તિથિ	વાર	તારીખ
વ૧	ગુરૂ	૪
૨	શુક્ર	૫
૩	શનિ	૬
૪	રવિ	૭
૪	સોમ	૮
૫	મંગળ	૯
૬	બુધ	૧૦
૮	ગુરૂ	૧૧
૯	શુક્ર	૧૨
૧૦	શનિ	૧૩
૧૧	રવિ	૧૪
૧૨	સોમ	૧૫
૧૩	મંગળ	૧૬
૧૪	બુધ	૧૭
૦))	ગુરૂ	૧૮
સુ૧	શુક્ર	૧૯
૨	શનિ	૨૦
૩	રવિ	૨૧
૪	સોમ	૨૨
૫	મંગળ	૨૩
૭	બુધ	૨૪
૭	ગુરૂ	૨૫
૮	શુક્ર	૨૬
૯	શનિ	૨૭
૧૦	રવિ	૨૮
૧૧	સોમ	૨૯
૧૨	મંગળ	૩૦
૧૩	બુધ	૩૧
૧૪	ગુરૂ	×૧
૧૫	શુક્ર	૨

×ડીસેમ્બર૩૦

વાર્ષિક લવાજમ.] **વિષય-દર્શન.** [રૂપિયા, બે.

માગશર-પોષ, વિ. સં. ૧૯૯૮.

વિષય.	લેખક.	પૃષ્ઠ.
ગોડી-પાર્શ્વનાથ સ્તવન,	મુનિ રામવિજયજી.	૪૧
श्री आदिनाथ चरित्र पद्य.	**जैनाचार्यश्रीजयसिंहसूरिजी.**	૪૨
श्री शीलकुलकम्	**जैनाचार्यश्रीविजयपद्मसूरिजी.**	૪૪
शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा.	**पूज्य मु. श्री. प्रमोदविजयजी.**	૪૫
" શ્રીસિદ્ધચક્રની તાત્ત્વિક ભાવના. "	જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયપદ્મસૂરિજી.	૪૭
"ધર્મ્ય વિચાર."	ઉપાધ્યાય શ્રીસિદ્ધિમુનિજી.	૪૯
સંસાર ચિતાર અને મુક્તિના સુખ.	મુનિ શ્રી રામવિજયજી.	૫૧
સેવાધર્મનું સત્ય સ્વરૂપ.	મુનિ શ્રી પ્રેમવિમળજી.	૫૨
અર્હત દર્શન અને ઇશ્વર.	મણીશંકર કાળીદાસ વૈદ્યશાસ્ત્રી.	૫૩
"પ્રશ્નોત્તર..."	ઝવેરચંદ છગનલાલ સુરવાડાવાળા.	૫૫
જમનાદાસ ઉદાણીનું પ્રવચન.	મળેલું	૫૭
सानुवाद जीवविचार प्रकरणम्.	**मुनिश्री दक्षविजयजी.**	૬૪
રાધનપુરી ભાઇઓનું આનંદ સંમેલન.	મળેલું.	૬૫
ઉપધાન-તપ માળા પરિધાન મહોત્સવ.	તંત્રી.	૬૯
વર્તમાન-સમાચાર.	"	૭૧

વદિ ૧ ગુરૂ, રોહિણીદિન.
વદિ ૧૦ શનિ, પોષી-દશમ.
શ્રીપાર્શ્વનાથ જન્મદિન.
વદિ ૧૧ રવિ, શ્રીપાર્શ્વનાથ દીક્ષાદિન.
વદિ ૧૨ સોમ, શ્રીચંદ્રપ્રભુ જન્મદિન.
વદિ ૧૩ મંગળ, શ્રીચંદ્રપ્રભુ દીક્ષાદિન.
વદિ ૧૪ બુધ, શ્રી શીતળનાથ કેવલદિન.

સુદિ ૬ બુધ, શ્રીવિમળનાથ કેવલદિન.
સુદિ ૯ શનિ, શ્રીશાંતિનાથ કેવલદિન
સુદિ ૧૧ સોમ, બકરી ઇદ.
શ્રીઅજિતનાથ કેવલદિન.
સુદિ ૧૩ બુધ, રોહિણી દિન.
સુદિ ૧૪ ગુરૂ, શ્રીઅભિનંદન કેવલદિન.
સુદિ ૧૫ શુક્ર, શ્રીધર્મનાથ કેવલદિન.

દ્વારાઃ-વિજયનીતિસૂરિ જૈન પુસ્તકાલય, ગાંધીરોડ, અમદાવાદ.

જૈનધર્મ વિકાસ.

પુસ્તક ૨ જું. માગશર, સં. ૧૯૯૮. અંક ૨ જો.

ગોડી-પાર્શ્વનાથ સ્તવન

પ્રગટ થયા ગોડી-પાસજીરે લાલ,
આવ્યા મોરવાડા મોઝારરે, કેસરીયા લાલ.
ગુણ ગોડીજીના ગાવસુંરે લાલ,
હયડે ધરી ઉછરંગરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ-૧.
સોઢાને કાસદ મોકલાવ્યારે લાલ,
કહેજો પુંજાજીને વાત રે, કેશરીયા લાલ.
પ્રભાતે વ્હેલા પધારશોરે લાલ,
દરીશણ રાતો રાતરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ-૨.
પારકરથી સોઢા આવીયા રે લાલ,
આવ્યા મોરવાડા મોઝારરે, કેશરીયા લાલ.
ઉંટ, ઘોડા, રથ, ગાડલાંરે લાલ,
પાળાંતણો નહિ પારરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ-૩.
ઉંચે ચડુ ને નીચે ઉતરૂરે લાલ,
જોઉ પાર્શ્વનાથની વાટરે, કેશરીયા લાલ.
એટલામાં ગોડીજી પધારીયારે લાલ,
હુવો છે જય જયકારરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ-૪.
કેશર, ચંદન ઘોળાઇ રહ્યારે લાલ,
લીધા કંચોળા હાથ રે, કેશરીયા લાલ.
નિર્મળ નીરે નાહી કરીરે લાલ,
પૂજા કરૂ રંગ રોળરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ-૫
રાધનપુરના રાજીયારે લાલ,
મસાલીયા, સુજાણ રે, કેશરીયા લાલ.
ધારસી, જેસંગભાઈના જોડલાંરે લાલ,
માહે સાંકળચંદ સરદારરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ-૬
સંઘવીએ સંઘ જમાડયોરે લાલ,

માનસંગ અને ભોજરાજરે, કેશરીયા લાલ.
ખીરો, દાળ, અને લાડવારે લાલ,
ઉપર મઝાના મગરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ—૭
શોભા બહુ ને સંઘ ચાલીયોરે લાલ,
આબુજી સામો જાયરે, કેશરીયા લાલ.
સંવત અઢારસેં અઢોતરોરે લાલ,
માસ ચૈતરને સોમવારરે, કેશરીયા લાલ પ્રગટ—૮.
દર્શન કરાવ્યા સંઘને રે લાલ,
તેથી હરખ ઉરમાં ન માયરે, કેશરીયા લાલ.
કર જોડી રામવિજય કવી ભણે રે લાલ,
ગુણ ગોડીજીના ગાયરે, કેશરીયા લાલ. પ્રગટ-૯.

॥ श्री आदिनाथ चरित्र पद्य ॥

(जैनाचार्य श्रीजयसिंहसूरीजी तरफथी मळेलुं)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૭થી અનુસંધાન)

इमि कह कर आकाश समाही, अंतर ध्यान हुआ क्षण मांही ।
यह चरित्र निज हृदय विचारो , निज परलोकहि तुरत सुधारो ॥
स्वयं बुद्ध की बात सुन, महाबल नृपति सुजाना ।
धर्मास्तिक निजमानकर, कीना धर्म बखान ॥
जबहि नृपतिमन उपजा ज्ञाना, झूठ सांच सब तुरत पिछाना ।
स्वयंबुद्ध अति हर्षित होई, धन्य धर्म नृप जाना सोई ॥
सुनहुं नृपति तुम कुलके माहीं, हुए एक कुरु चंद्रा हाई ।
तिन कर पुत्र हरिस्चंद्र नामा, ते नृप अतीहिं नीच दुष्कामा ॥
दया विहीन हिंसक अति घोरा, महा भयंकर पापी चोरा ।
तिन नृप राज्य किया बहु काला, पूर्वोपार्जीत पुन्य रसाला ॥
पूर्व पुन्य क्षय होवन लागा, धातु रोग नृपतिकर लागा ।
भोगत दुख बहुत वह भारी, सुख कर वस्तु हुइ सुख कारी ॥
विषम दुख भोगतवह राजा, देह त्याग निज लोक विराजा ।
तिन कर पुत्र हुआ अति धर्मी, नीतिवान और शुभ कर्मी ॥

नाम सुबद्धिनृपति सखा, बुलवाया महिपाल।
सन्माना अति मित्रको, बोले वचन रसाल ॥
अहोमित्र तुमहो सब लायक, काम करो एक सब सुख दायक।
जो तुम सुना धर्मअरु ध्याना, सो सब मुझको कहो बखाना ॥
सुबुद्धी यह सुन सुख पावा, राजज्ञा निज सीस चडाया।
सुन सुन धर्म सुनावे राजा, यही सुबुद्धी कीना काजा ॥
सुन नृपति अति श्रद्धा होई, जिम रोगि न औषधि सन होई।
एक दिन नगर सिलंधर स्वामी, हुए केवली मोक्षहीं गामी ॥
रिषिबंदन आये तह देवा, करत महोत्सव सुरनर सेवा।
सुबुद्धी यह वात, हरिश्चंद्र से जाय कही।
सुन नृपति हर्षात, तुरत चला मुनिवर ढिग ॥
मुनिवर बंदन कर वह राजा, नत मस्तक मुनि चरण विराजा ॥
मुनिवर धर्म कहा बहु भांती, सुन नृप हृदय विराजी शांती।
बोला नृप पुनि दोय करजोडी, स्वामी सुनिय अर्ज एक मोरी ॥
नाथ पिता मम थे अति पापी, कवन गति तिन पाई श्रांपी।
तब बोले मुनि नाथ कृपाला, सप्तम नर्क गया बहु काला ॥
यह सुन नृप वेराग्य विचारा, मिटा मोह अरु हुआ उजारा।
भवन आय बुलवाय कुमारा, देय ज्ञान सोंपा सब भारा ॥
सुबद्धी सन आज्ञा मागी, मंत्री अब में हाउं वैरागी।
कहेउ मंत्री तब में वृत लेऊं, मेरा कार्य पुत्र कर देऊं ॥
दोनो कुंवर बुलाय कर, समझाया सब ज्ञान।
राज्य नीति अरु धर्मका, कीना बहुत बखान ॥
कुंवर धर्म पर श्रद्धा रखना, राज्य संभाल धर्म में रहना।
सद्बुद्धि हरिस्चंद, दोनों आये मुनि ढिग।
वृत लीना सुख कंद, मोक्ष लाभ पावन किया ॥
तेही वंस एक दंडक राजा, हुआ प्रचंड जस हे यमराजा ॥
तिन कर पुत्र प्रतीभाशाली, तेहि नाम सुन्दर मणीमाली।
दंडक पुत्रसु सुन्दर भारी. बड़ा मोह कोषपुर नारी ॥
उमर भोग मोह के कारण, जन्म भया कोष विष धारण।
कोष निरक्षण जो कोइ आवे, ताको वह चटपट कर जावे ॥

अपूर्ण

॥ शील कुलकम् ॥

कर्ता—श्रीजैनाचार्य श्री विजयपद्मसूरिजी.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૯થી અનુસંધાન)

सच्चसुहं चारित्ते-चायसरुवे ण भोगभोअम्मि ।
अंगे नवमे पत्तो-संसं धण्णो पहुमुहेणं ॥४३॥
भव्वा ! दव्वाईए-विसयाईए य जारिसो रंगो ।
जइ तारिसो ऽवि होज्जा-जिणधम्मे तयहिओ पुण्णा ॥४४॥
अप्पायासरवणेणं-होज्ज तया मुत्ति सुरक संपत्ती ।
धम्मो कल्लाणकरो-दुग्गइया विसयदव्वाई ॥४५॥
विसविसएसुय भेओ-अहिओ से पण्णवेइ भक्खणओ ॥
इगसो मारेइ विसं-बहुसो मारिंति ते विसया ॥४६॥
आवेड्डिज्जइ जेहिं-जीवा घण चिक्कणाइ कम्मेहिं ।
विसया ते णाअव्वा-एसा चिंतिज्ज वुप्पत्ती ॥४७॥
वीसासा विसयाणं-पत्तदुहा रावणइपमुहणरा ।
पढमो चउत्थनिरए-भवम्मि भमिओ तहा बीओ ॥४८॥
विसयज्झाणा वि गओ-निरयं जइ रावणो तया भोगा ।
दुग्गइलाहे चोज्जं-किं ता सुक्खं विसयचाया ॥४९॥
एगिंदियविसयरई-जीवाणं देइ तिव्वदुक्खतइं ।
पंचिंदियविसयरई-दुग्गइमरणाइबहुदुक्खा ॥५०॥
हवइ करी फासेणं-करिणिं दट्ठूण कामपरतंतो ।
लहइ दुहं गड्डाए-एवं मच्छोवि रसगिद्धो ॥५१॥
सद्दसवणसंगेणं-मओ दुही होइ गंधओ भमरो ।
रूवपसत्तपअंगा-पडिय पईवे लहंति मिइं ॥५२॥
महिसी जग्गंताणं-णिद्दालूणं-तहेव महिस त्ति ।
गड्डरियपवाहपहं-अपमाओ होज्ज सोऊणं ॥५३॥
निवकुंभाररमाओ-परोप्परं नेहसंगया दोण्णि ।
सययं मिलंति गदिणे-दो णो मिलिया निवइ रमणी ॥५४॥
चिंतागया कहेए-दासीं तुं गच्छ कुंभआरीए ।
गेहं सा ण किमइ-आगच्छइ तं पलोएज्जा ॥५५॥

अपूर्ण

शास्त्रसम्मत मानवधर्म और मूर्तिपूजा.

(लेखक)—पूज्य मु. श्री. प्रमोदविजयजी म. (पन्नालालजी)

(ગતાંક. પૃષ્ઠ ૮ થી અનુસંધાન)

तात्पर्य यह है कि संसार में ऐसा कोइ कार्य नहीं है कि जिसको उपादान कारण की तो आवश्यकता रहे और निमित्त कारण का किंचित् भी अवलंबन न ग्रहण करना पड़े। जहां उपादान कारण है वहां निमित्त कारण भी अवश्य ही होगा, क्योंकि उपादान और निमित्त ये दोनों चचेरे भाइ हैं। चचेरे भाई ही कों माने जाय यदि सहोदर ज्येष्ठ और कनिष्ठ भ्राताही कहे जाय तो किसी प्रकार की अत्युक्ति नहीं होगी। उपादान कारणरुप ज्येष्ठ बंधु स्वाती पूर्त्यनंतर निमित्त का साथ छोड़ सकता है किंतु निमित्त कारण अपने ज्येष्ठ बंधु के साथ इसी प्रकार विश्वास घात कर कृतघ्नता का परिचय कदापि नहीं देगा प्रत्युत् उपादान की पुष्टि ही करता जायगा। उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट प्रमाणित हो जाता है कि उपादान कारण में स्फूर्ति उत्पन्न करनेवाला निमित्त कारण ही है और उसकी आवश्यकता भी प्रचुर परिमाण में रहती है। इसी प्रकार मोक्ष प्राप्ति रूप कार्य में द्विविध चारित्र धर्म उपादान कारण होनेपर भी मूर्ति रूप निमित्त की अवश्य आवश्यकता रखते हैं कोंकि इसके विना स्वरूप ज्ञान कदापि नहीं हो सकता है। मूर्ति ही अनगार और अगार धर्म की पुष्टि में सहायिका है। और वही श्रुत धर्म तथा चारित्र धर्म का, देश विरति और सर्व विरति का पृथक् २ स्वरुप परिचय कराती है। मूर्ति का येन केन प्रकारेण स्वीकार किये बिना प्रवृत्ति क्रिया ही नहीं हो सकती है। अगार धर्म और अनगार धर्म इन दोंनों का विकास मार्ग मूर्ति के अवलंबन पर ही निर्भर है। जब तक साकार मूर्ति का अवलंबन नहीं लेंगे तब तक अरिहंत का स्वरुप ज्ञान भी नहीं हो सकेगा और न गुण ग्राम ही हो सकेंगे। आत्मा में सतत धर्म भावना जागृत रखने का मुख्य साधन एक मूर्ति ही है।

वैसे तो आत्मा के साथ धर्म का अनादि कालीन संबंध सिद्ध है तथापि उस संबंध को स्थायी और दृढ़ बनाने के लिये किसी ऐसे अवलंबन की आवश्यकता रहा करती है जिससे वह आत्म विकास में सहायक हो जाय। आत्मा के साथ धर्म का जो संबंध है वह प्रमाद के कारण कभी प्रकट रुप में रहता है तो कभी अप्रकट रूप में। कभी जागृतावस्था में तो कभी सुप्तावस्था में तो कभी सर्वथा लुप्तावस्था में भी पाया जाता है। इस प्रमाद रूप आवरण के दूरीकरण का सरल और सुंदर उपाय मूर्ति का आधार ग्रहण करना ही है। इसके अवलंबन से न केवल विद्वज्जन समाज ही सत्यस्वरूप को पहिचान सकता है प्रत्युत् आबाल गोपाल भी धर्म मार्ग की ओर झुक कर कल्याण

यत्किंचित् रूप में अवश्य समझ सकते हैं। सतत धर्मभावनाओं को जागृत रखने का सुंदर और सर्व सुगम्य साधन यदि दुनिया में कोई हो सकता है तो एह केवल मूर्ति ही है।

जिस प्रकार शास्त्र जिनप्रणीत वाणी रूप होने से आत्म कल्याण और यथार्थ वस्तु ज्ञान कराने में निमित्त भुत हैं उसी प्रकार प्रभु प्रतिमा भी अरिहंत मूर्तिवत् होने से आत्म कल्याण में निमित्त भूत है। इसके आधार से हम अरिहंत की अचलावस्था, ध्यानस्थ स्थिति ओर शान्तमुद्रा को सुगमता से पहिचान सकते हैं।

मानवता के साथ मूर्ति पूजा का संबंध अर्वाचीन नहीं किंतु समसामयिक पुरातन ही है। व्यवहारिक, धार्मिक एवं नैतिक सभी कार्यों में मूर्ति का अवलंबन आवश्यक माना गया है। सकल चराचर रूप जगत् ही मूर्तिमय है। अमूर्त पदार्थ का स्वरूप ज्ञान करने के लिये भी मूर्ती का आधार लेना ही पड़ता है। जब तक उसका आधार न लिया जायगा तब तक अमूर्त का ज्ञान भी असंभव ही है। इस प्रकार शास्त्र सम्मत मानव जीवन का धर्म के साथ और धर्म का मूर्ती के साथ परस्पर घनिष्ठ और विश्वव्यापक संबंध प्रमाण सिद्ध है।

मूर्ति और धर्म संस्कृति

जीवन का धर्म के साथ और धर्म का मूर्ति के साथ संबंध सिद्ध होजने के पश्चात् अब हमें यह जानने की परमावश्यकता है कि मूर्ति मानने से या मूर्ति का अवलंबन लेने से धर्मसंस्कृति, मानव संस्कृति और व्यवहार संस्कृति पर उसका क्या प्रभाव पडता है? अथवा अब तक कितना प्रभाव पड़ा है? क्या मूर्ति के द्वारा संस्कृति का टिकाव हो सकता है? इत्यादि शंकाओं पर भी किंचित् झुलक डालना कर्तव्य रूप हो जाता है इतना हो नहीं किंतु प्रासंगिक होने से अनिवार्य भी है:—

बंधुओ। प्रत्येक प्राणीका जीवन संस्कृति प्रधान है। संस्कृति के अनुकूल ही उस का जीवन बनता जाता है। संस्कृति का प्रभाव पड़े बिना भी कदापि नहीं रहता है। मानव जीवन भी इससे वंचित नहीं माना जा सकता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने से उस पर संस्कृति का असर भी अत्यधिक मात्रा में और दृढता के साथ पड़ता है। जब मानव शरीर ही मूर्ति मय है तो मूर्ति के संस्कारों का उसके हृदय में स्थान होना अस्वभाविक नहीं है यह तो प्रकृति दत्त गुण ही है। जिसके हृदय में एतद्‌विषयक संस्कार नहीं उसकी मानवता शंकास्पद स्थिति में ही है। ऐसा मानने में किसी प्रकार का एतराज नहीं हो सकता है। चाहे ये संस्कार प्रकट रूप में या अप्रकट रूप में किंतु मूर्ति को ही सिद्धि के साधक हैं।

अपूर्ण.

શ્રી સિદ્ધચક્રની તાત્વિક ભાવના.

લેખક. જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયપદ્મસૂરિ.

(પુ. ૨ અંક ૧ પૃષ્ઠ ૧૩ થી અનુસંધાન)

હે ભવ્ય જીવો ? ચાર ગતિના જીવો પૈકી મનુષ્યોનેજ ધર્મારાધનની સંપૂર્ણ સામગ્રી મલી શકે છે. કારણ કે–દેવો વિષયમાં આસક્ત છે–નારકીઓ અનેક પ્રકારના દુ:ખોથી પીડાયેલા હોય છે. અને તિર્યંચો વિવેક વગરના હોય છે. વૈરાગ્ય, દુ:ખોની શાંતિ, અને વિવેક આ ત્રણ વિના ધર્મની આરાધના ન થઇ શકે માટે જ મનુષ્યો વૈરાગ્યાદિથી મોક્ષ રૂપિ મ્હેલમાં ચઢવાની છ પગથીયાવાલી નિસરણી ઉપર ચઢી મોક્ષરૂપિ મ્હેલમાં જઇ શકે છે. મહા પુણ્યના ઉદયથી મલી શકે છે તેવા તે છ પયથીયા આ પ્રમાણે જાણવા ૧. મનુષ્યણું ૨. આર્ય દેશમાં જન્મ ૩. ઉત્તમ કુલની પ્રાપ્તિ ૪. શ્રદ્ધા ૫. ગુરૂના વચનોનું સાંભળવું. ૬. વિવેક–આવી ઉત્તમ સામગ્રી મનુષ્યોજ મેલવી શકે, માટે, મનુષ્યના ભવને દશ દૃષ્ટાન્તે દુર્લભ કીધો છે. તેવા મનુષ્ય ભવમાં મહાપુણ્યના ઉદયથી કલ્પવૃક્ષ સમાન વીતરાગનો ધર્મ પામ્યા. તેમાં એતો અવશ્ય ધ્યાનમાં રાખવું કે કરોડો રત્નો આપતાં છતાં પણ ગયેલો સમય પાછો આવી શકતો નથી. જે દિવસોમાં ધર્મની આરાધના કરાય, તેજ દિવસો સફલ જાણવા માટે ઇંદ્રિયોને વશ રાખીને પ્રમાદનો ત્યાગ કરીને વિવેકવંત થઇને હર્ષથી આ ધર્મની એવી આરાધના કરવી કે જેથી આ ભવ અને પરભવ બંને સફલ થાય. તથા આયુષ્ય ચપલ છે. અને સંસારના દરેક પદાર્થો ક્ષણિક અને દુ:ખને આપનારા છે. તેમજ સંબંધને લઇને જ અનેક પ્રકારના દુ:ખો ભોગવવા પડે છે. તથા જેનો અનુભવ કરતાં ફરી પાછું દુ:ખ ભોગવવું પડે, તે વાસ્તવિક સાચું સુખ કહેવાય જ નહિ. તેવું સુખ તો ત્યાગ ધર્મની એટલે સંયમની આરાધના કરવાથી જ મલી શકે. દરેક આત્મા સુખને તો ચાહે જ છે. પણ જ્યાં સુધી ખરા સુખના સાધનોની સેવના થાય નહિ. ત્યાં સુધી ખરૂં સુખ મલેજ નહિ. જેઓ કાંઇપણ સમજણના ઘરમાં રહેલા છે. તેઓ તો તેવા સુખને મેલવવા માટે સંયમ ધર્મનેજ સાધે છે. દેવલોકમાં પણ રહેલા ભાવિ તીર્થંકર બિગેરે જીવો પણ તેજ સંયમની ચાહના રાખે છે. ચરમ શરીરી તીર્થંકરો પણ સંયમ ધર્મની સાધના કરે જ છે. મહાચક્રવર્તિ રાજા વિગેરે પણ અનર્ગલ ઋદ્ધિ અને ભોગોને છંડી સંયમ અંગીકાર કરે છે. માટે વાસ્તવિક સુખનું સાધન એક સંયમ જ છે. જો કે સંયમની આરાધના કરવામાં અનેક કષ્ટો સહન કરવા પડે છે. પણ તે પરિણામે અચલ અને અપાર સુખના દેનાર હોવાથી તેવા સુખની આગળ કષ્ટોનું દુ:ખ

અલ્પ જ ગણાય. આવું સંયમ જ્યારે દેશવિરતિ અવસ્થામાં રહેલી કર્મોની સ્થિતિમાંથી સંખ્યાતા સાગરોપમ પ્રમાણુ સ્થિતિ ઓછી કરે ત્યારે પ્રાપ્ત થાય છે. ઈંદ્રો અને ચક્રવર્તીયોના સુખથી પણ અનંત ગુણુ સુખ–રાગ–મદ–મોહ–રહિત સંયમ ધારિયોને હોય છે. માટેજ સંયમિ આત્માઓને રાજાનો ભય, અને ચોરનો ભય પણ હોતો નથી. તેઓ કર્મબંધના કારણોથી દૂર રહીને ક્ષમા વિગેરે દશ પ્રકારના સાધુ ધર્મની આરાધના કરીને અલ્પકાલમાં નિર્વાણપદ પામે છે. જે જીવો પ્રબલ મોહના ઉદયથી એટલે પ્રત્યાખ્યાનાવરણીયકષાયના તીવ્ર ઉદયથી સર્વ વિરતિ સંયમને અંગીકાર કરવા અસમર્થ હોય છે, તેઓએ શ્રાવકધર્મને જરૂર અંગીકાર કરવોજ જોઈએ, કારણકે જો શ્રાવક ધર્મની પણ વિધિપૂર્વક યથાર્થ આરાધના કરાય તો વધારેમાં વધારે ૮ ભવથી નવમો ભવ તો કરવોજ ન પડે તે શ્રાવક ધર્મનું સ્વરૂપ આ પ્રમાણે છે—

तिक्कालं जिणवंदणं पइदिणं पूआ जहासत्तिओ,
सज्झाओ गुरुवंदणंच विहिणा दाणं तहावस्सयं ॥
सत्तीए वयपालणं तहतवो अप्पुव्वनाणज्जणं,
एसो सावयपुंगवाण भणिओ धम्मो जिणिंदागमे ॥१॥

શ્રીવીતરાગના પ્રવચનમાં શ્રાવકોનો પવિત્ર ધર્મ આ પ્રમાણે કહેલ છે. શ્રાવકે હંમેશાં ૧ સવારે; બપોરે, અને સાંજે એમ ત્રણે કાલ પ્રભુને વંદન કરવું જોઇએ. પ્રભુવંદન સમ્યગ્દર્શનને નિર્મલ બનાવે છે. તથા ૨ ત્રણે કાલ પૂજા પણ અપૂર્વ ઉલ્લાસથી કરવી જોઇએ. પ્રભુની પૂજા કરનારને કોઈ પણ જાતની વિપત્તિ ભોગવવી ન પડે. મનને અપૂર્વ શાંતિ આપનાર પણ પ્રભુની પૂજાજ છે ૩ યથા-શક્તિ હંમેશાં ભણેલું સંભારવું ૪ હંમેશાં ત્રણે કાલ વિધિપૂર્વક ગુરૂ વંદન કરવું જોઇયે જ્યાં સુધી પ્રભુવંદન પ્રભુપૂજા અને ગુરૂ વંદન આ ત્રણ વાનાં ન થાય. ત્યાં સુધી મોંઢામાં પાણી પણ ન નાંખવું જોઇયે. ૫ દીન દુઃખી જીવોને યથાશક્તિ દાન દઇને પછી જમવું ૬ શક્તિના અનુસારે વ્રતને અંગીકાર કરી આરાધે તેની રક્ષા કરે ૭ યથાશક્તિ તપને સાધે. નિકાચિત કર્મોને પણ તપશ્ચર્યાથી દૂર કરી શકાય છે ૮ હંમેશાં નવું જ્ઞાન ભણવું. કારણ સંયમને પમાડનાર તેજ છે. સાધુએ અને શ્રાવકે હંમેશાં મૈત્રી પ્રમોદ કારૂણ્ય અને માધ્યસ્થ્ય આ ચારપ્રકારની ભાવના ભાવવી જોઇયે તેનું સ્વરૂપ આ છે–કોઈ પણ જીવ પાપ કર્મને ન કરે, સર્વ જીવો સુખી રહો, સર્વ જીવો કર્મોની પીડાથી મુક્ત થાઓ. આ મૈત્રી ભાવના કહેવાય. પ્રમોદ ભાવના એટલે ગુણવંત જીવોને જોઇને ખુશી થવું. કારૂણ્ય ભાવના એટલે દુઃખી જીવોને પ્રાણના ભોગે પણ દુઃખથી મુક્ત કરે, આ દ્રવ્ય દયા અને ધર્મને નહિ પામેલા જીવોને ધર્મ પમાડે એ ભાવ દયા આ બંને પ્રકારની દયારૂપ જલથી હંમેશાં હૃદય ભીંજાયેલું હોવું જોઇયે.

(અપૂર્ણ.)

ધર્મ્ય વિચાર.

લેખક—ઉપાધ્યાય શ્રી સિદ્ધિમુનિજી.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૧૫ થી અનુસંધાન)

(૧૦) પુણ્ય, બીજ-રક્ત, ઉછેર, શિક્ષણુ અને તાલીમ વિગેરે વિગેરે યથાયોગ્ય જીવનને ઘડનારાં, પોષનારાં અને નભાવનારાં છે. એની જેટલી સુંદરતા અને બલવત્તરતા; મનુષ્ય તેટલો જ સુંદર અને બલવાન બને છે. એ બધામાં પુણ્યનું સ્થાન સૌથી પ્રથમ અને વિશાળ છે. એના આધારે જ અન્ય સર્વના લાભ મળે છે. મનુષ્યના સર્વ પ્રયત્નો પુણ્યની પાછળ પાછળ જ ગતિમાન થાય છે. મનુષ્ય પોતે કે તેના સર્જનહારાઓ જે નથી લાવી શકતા, તે દુઃશકય અશકય મનાતાને પ્રબલ પુણ્ય બળજબરીથી ખેંચી લાવે છે. પણુ ભિન્ન ભિન્ન દૃષ્ટિથી અનેક નામો વડે ઓળખાતું આ પુણ્ય ચર્મચક્ષુને અદૃશ્ય છે; તેથી અકસ્માત્ કે સહેતુક, ગમે તેમ પણુ; પ્રયત્નની આવશ્યકતા જગતના સર્વ વિચારશીલ બુદ્ધિમાનો સ્વીકારે છે.

ઉત્તમ વંશવેલો વિસ્તારવાને પતિપત્નીએ ઉત્તમ જીવન ગાળવું જોઇએ. તેમના જીવનમાં એકેએક કાર્યમાં નીતિ અને સદ્ધર્મ ઓતપ્રોત થઇ રહેલો હોવો જોઈએ. એમનો પોતાનો નબળો પણુ બીજ-રક્તનો વારસો એથી અમુક અંશે જરૂર સુધરે; તો પછી જેઓને તેવા પ્રકારનો ઉત્તમ વારસો મળ્યો હોય તેની શુદ્ધતા રહી, તેમાં વિશેષ સુધારો થાય તો આશ્ચર્ય જેવું કાંઈ પણુ નથી. ઉત્તમ વારસાને ઉત્તમ જીવનથી ઘણું જ સુંદર પોષણુ મળી તેની શુદ્ધતા ખીલતી જાય છે. અને પરિણામે તેની પ્રજા ગૌરવાન્વિત બને છે. કુતરાઓની બ્હોળી પ્રજા કરતાં સિંહોની અલ્પ પ્રજાનું ગૌરવ વિશેષ છે, ઘણું જ વિશેષ છે. સિંહો પશુ છે. અહિં મનુષ્યની વાત કરવામાં આવે છે. સિંહો કરતાં મનુષ્યોમાં કેટલી ગૌરવજનક વિશેષતા જોઈએ ?

સંસારીમાં પ્રેમ તો અતિશય કદાચ હોય, પણુ વિષયનો અતિશય હોય તો તે બહુ જ અનુચિત છે. જે પ્રેમમાં વિષયાતિરેક હોય ત્યાં પૂર્ણ પવિત્રતા હોય નહિ, એટલું જ નહિ, પરન્તુ પવિત્રતા માત્ર પણુ હોય નહિ, અને કદાચ આભાસરૂપ હોય તો તે ઝાઝો વખત ટકી શકતી નથી. ગૃહસ્થાશ્રમમાંય બનતા સંયમની પુરતી જરૂરીયાત છે. **'भोगे रोग भयं'** એ નીતિવાકયને વધારે વિશાળતાથી સમજવા અને ઉપયોગ કરતાં શિખવું જોઇએ. ભોગોથી રોગની ભીતિ છે

એટલું જ માત્ર નહિ, તેથી પાપ ભય પણ છે. પાપ વિના ભોગો સેવાતા નથી. સર્વસુખોના કારણભૂત પુણ્યને ખીલવવા અને સર્વ દુ:ખોના કારણભૂત પાપને અટકાવવા જેમ બને તેમ ભોગોને ઓછા ઓછા કરવા મનુષ્ય તરીકે જીવતા પ્રત્યેક મનુષ્યે સદા તત્પર રહેવું જોઇએ. ભોગોની ઓછાશ એ જેમ મુકિતનો માર્ગ છે; તેમ તે બલ, બુદ્ધિ અને લક્ષ્મી પ્રવૃદ્ધ કરવાનોય સુંદરમાં સુંદર માર્ગ છે. ભોગની અલ્પતાવાળું જીવન ગાળનારાઓનાં સંતાનોમાં પણ સ્વભાવત: બલ વિગેરે વિશેષ હોવાનું જ. કારણ, ભોગોની અલ્પ અલ્પતા પૂર્વક પુણ્ય જીવન ગાળનારાઓના પુણ્યમય બીજ-રક્તને ગ્રહનારા પુણ્યાત્માઓ જ હોય ' ઘણા પુત્રોની સાથે ગર્દભી ભારને વહે છે ' ના અનુભવો ઉપરોક્ત પુણ્યાત્માં દંપતી-જીવનમાં નહિ જ થવાના. જમીન અને બીજની સરસાઈ એ સુંદર, અતિસુંદર ફલપ્રાપ્તિનાં પ્રાથમિક મુખ્ય કારણો છે; માતાએ શરીરમાંથી બહાર નંખાતા 'કીડા'ઓથી સંતોષ પામવાનો નથી, પણ નરસિંહોના પુણ્યપ્રસવથી, માતાએ 'મહાવીર' જન્માવવાની અને 'વીર માતા' બનવાની હોંશ રાખવી જોઇએ. 'રત્નકુક્ષી' બનવાની અભિલાષાએ તેણીએ એવું લોહી આપવા ઉમંગ અને ઉત્સાહ ધરવો જોઇએ કે, તેનો પુત્ર તેના ધાવણની ય પરવા વિનાનો હોય. એને તો જ્યાં નજર પડે ત્યાં અમૃત જ હોય. 'વીર'ની માતામાં ભૂંડણની ભાવના સ્વપ્નેય ન જ અનુભવાય; અને તેથી તેના સંતાનોમાં પ્રાય: નિકૃષ્ટ ભાવનાના વારસાથી જન્મતા અધમ રસ તરફ વળવાનું કયાંથી હોય ? એ સંતાનોમાં નિર્લેપતા જ આવી વસવાની. આવા સંતાનોની ઉછેર અને શિક્ષણ સ્વભાવત: અનુકૂલ અને સુંદર જ હોવાનાં. તેઓને તાલીમ પણ તેવી જ સુંદર મળવાની.. આમ છતાં બાહ્ય કારણોની ઉપેક્ષા કરવી બુદ્ધિને પાલવતી નથી.

અતીવ શ્રદ્ધેય અને સર્વથા વિશ્વસનીય સત્પ્રમાણ રૂપ ' બાબાવાકય ' થી ' મહાવીરો ' ના સંતાનીય શ્રમણસંઘને અને તેના અનુયાથી વર્ગને નિશ્ચય છે કે, ' મહાવીરો ' ને પણ ધાવો રખાય છે અને નિશાળે મુકવાનાં દશ્યો ઉજવાય છે. તો પછી અન્યોને માટે યથાયોગ્ય જેવી તેવી જરૂરીયાત કેમ ન હોય ? તેના હિતેચ્છુઓથી કેમ ન જોવાય ? બગડેલા વાતાવરણમાં એની ખાસ આવશ્યકતા સ્વીકારવી જ પડે. તેમાં પણ જ્યારે બગડેલાને સુધરેલા તરીકે ઓળખાવી એ વાતાવરણના પ્રવાહમાં અન્યોને ઘસડી જવાના પુષ્કળ પ્રયાસ કરનારોનું અસ્તિત્વ જોર મારી રહ્યું હોય ત્યારે તો, ઉપરોક્ત એ આવશ્યકતા બહુ બહુ રૂપે સ્વીકારવી પડે- અર્થાત્ જેવાં તેવાં બીજ-રક્તોને ઉછેરવામાં, શીખવામાં અને કેળવવામાં દુષ્ટ વાતાવરણથી રક્ષણ અને અમુક પ્રકારના સ્વતંત્ર પ્રયાસની અનિવાર્ય આવશ્યકતા છે. (અપૂર્ણ.)

સંસાર ચિતાર અને મુક્તિના સુખ.

લેખકઃ— મુનિ રામવિજયજી (આ. વિજયનેમિસૂરીશ્વરજીના પ્રશિષ્ય)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૫ થી અનુસંધાન)

(ઝેર ગયા ને વેર ગયા વળી કાળા કેર ગયા કરનારઃ એ રાગ)

જલેબી વળી સૂત્રફેણી, જાંબુ ઘેબર સ્વાદુ શાક.
માલપુઆ શીખંડ સેવો, પકવાન રાશી મળી અથાક.
દહીં ભાંગીને કીધી કઢીઓ, માંહી નાખી વડી વઘાર.
સુરત જમણો કાશી મરણો, કહેવત સાચી જગ મોઝાર. (૮)
દ્રવ્ય પકવાનો અમે ગણાવી, ભાવ પકવાનો સંવર ખંડ.
સાતે ભાખ્યા વીરજીનરાયે, શાસ્ત્રે સાચી શાખ અખંડ.
નીતિ જ્ઞાન વ્યવહારે વંચિત, મુરખા ન લહે સ્વાદુ અન્ન.
દેખી અટકે સ્પર્શી ભડકે, અલ્યા કરને પ્રભુ ભજન. (૯)
ભુખ્યા તરસ્યાં દુખડાં દીલડે, જાણે તેઓ અને કિરતાર.
મોટર દેખી વગડાઉ ભેંસો, માને મગજે ખોટાં ખેલ.
ફરનીચરને બાગબગીચા, રમત ગમત નવનવ અંગ.
નાટક નાચો વાજીંત્ર શબ્દો, માને કેદી જન્મની જેલ. (૧૦)
રાજભુવનના સુંદર સ્થાને, રાખ્યા આપે મૃદુ રસાલ.
ફોનોગ્રાફને નવી ઘડીઆળો, ટનટન વાજે આનંદ ખ્યાલ.
દર્પણ સુંદર બીલોરીના, કાચે દેખે રૂપ હજાર.
ભુત ભડકામણું સ્થાનજ જાણે, નિદ્રા નાવે નયન લગાર. (૧૧)
અજ્ઞાન વશથી મગજ તોરે, થાયે નહિં આપણું ચલણ.
ડાંગો મારી દર્પણ ઝુમર, ઘડીઆળોનું કરે ચૂરણ.
લાખોની કિંમતી ચીજો, ભાંગી ફોડી કરે હેરાન.
રાજા મંત્રી ચિંતે મનમાં, જાણી કરે બધું સહન. (૧૨)
અધ્યાતમ મંદિરની માંહિ, રાખ્યા આત્મ ગુણ ગંભીર.
ધ્યાનના તારો વાગે અવિચલ, વીણા વાંસલી વાજે સનૂર.
આતમ અનુભવ દરપણ સારાં, નિજરૂપનું કરાવે ભાન.
સંયમ સ્થાને ઝુમર સારાં, ઘટિકા ગુણ ગણુનાના સ્થાન. (૧૩)
નવતત્વરૂપ બગીચા મધ્યે, તત્વ ફુલોની સુરભી ગંધ.
વાંચન મનન પુનરાવર્તન, પઠન પાઠન મોટરના ધંધા.
દ્રવ્ય સંવરને ભાવસંવરના, સમિતિ આદિ ભોજન સાર.
કવલ લેતાં કેવળ ઉપજે, કોટિ ધન્ય તાપસ અવતાર. (૧૪)

સેવાધર્મનું સત્ય સ્વરૂપ.

લેખકઃ—**મુનિરાજશ્રી પ્રેમવિમળજી મહારાજ.** (મુ. કોટા, રાજપુતાના.)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૩ થી અનુસંધાન)

इह लोकविधीन्कुरुते, स्वयंजनो न तु गुरु विना धर्मम्
अश्वोहि तृणान्यत्ति; स्वयं घृतं पाय्यतेऽन्येन.

અર્થ—મનુષ્ય આ લોકનાં અન્ય કાર્યો પોતાની જાતે કરી શકે છે, પણ ધમ તો ગુરૂ વિના કરી શકાતો નથીજ. જેમકે ઘાસને ઘોડો પોતાની મેળે ખાય છે, પરંતુ ઘી અન્ય મનુષ્ય વડે જ ઘોડો પી શકે છે.

गुणिनोऽपि हि सीदन्ति, गुणग्राही न चेदिह,
स गुणः पूर्ण कुम्भोऽपि, कुप एव निमज्जति.

અર્થ—દોરડા સહીત એવો પૂર્ણ કુંભ—ઘડો હોય તો, પણ તેને કુવામાંથી કાઢવાને કોઇ મનુષ્ય જો હોય નહિ તો તે ઘડો ફક્ત કુવામાં જ પડી રહે છે. તેમ ગુરૂ વિના ગુણવાન મનુષ્ય પણ ફક્ત સંસારમાંજ ભ્રમણ કરે છે. શાસ્ત્રકાર મહારાજાઓ સ્પષ્ટપણે ફરમાવે છે કે—કંઈપણ ધર્મ ક્રિયા નહિ કરનાર મનુષ્યો શ્રેણીક તથા કૃષ્ણ મહારાજની જેમ, સદ્ગુરૂની સેવા ભક્તિ કરી સ્વ. શ્રેયઃ કરી શકે છે. ઘોર—દુરાચારી પાપત્માઓ સદ્ગુરૂની સેવા કરી આશીર્વાદ પામ્યા છે, કે-જે આશીર્વાદ સૃષ્ટીના જીવોને પરમસુખ અર્પવાને એક અપૂર્વ વસ્તુ છે. મેઘ-કુમાર જેવા રાજકુમારો, શ્રેણીક જેવા મહારાજાઓ, કૃષ્ણ જેવા વાસુદેવો અને સનત્કુમાર જેવા ચક્રવર્તિઓ સ્વકલ્યાણ અર્થે સદ્ગુરૂની સેવા કરવા તત્પર બને છે. એ શું બતાવે છે? જૈન ધર્મ પ્રત્યે શ્રેષ્ઠ અને સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા ધરાવનાર મનુષ્ય, નવકાર મંત્રનું પાંચમું પદ '**नमो लोए सव्व साहूणं**' વિચારશે તો જરૂર સમજી શકશે કે—જ્ઞાની મહર્ષીઓએ આ લોકમાં રહેલ સર્વ સાધુઓને નમસ્કાર કરવાનું ફરમાન કર્યું છે. પરંતુ એજ નવકાર મંત્રમાં એકપણ પદ એવું નથી કે—જે પદાનુસાર અસંયતિ યાને ફક્ત સંસારનું જ રાતદીન સેવન કરનારાઓની સેવા—ચાકરી કરવાનું જણાવેલ હોય, જૈન ધર્મે પરમ સુખની પ્રાપ્તી અંગે જણાવેલ નવકાર મંત્ર પ્રત્યે ફક્ત એક સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા દાખવવા માટે જો આજનો ઉદ્દામવાદી વર્ગ તૈયાર બને, તો આજે સુચારીત્રસંપન્ન વ્યક્તિઓ પાસે સેવા કરાવવાની જે અયોગ્ય અને અનિચ્છનીય અભિલાષાઓ રખાય છે, તે સદાને માટે નષ્ટ પ્રાયઃ થશે, એ નિર્વિવાદ છે. પરમ આર્હત કુમારપાલ મહારાજાના ઉદયન મંત્રીશ્વરજી અંતાવસ્થાના સમયે સદ્ગતિ પામવા સાધુ મુનીરાજના દર્શનની અભિલાષા સેવે છે, અને સદ્ભાગ્યે સહચારી મનુષ્યોએ સુસંયોગો ઉપસ્થીત કરતાં એજ મંત્રીશ્વર સદ્ગતિને પામે છે. એ એજ સિદ્ધ

કરે છે કે-સદ્દગતિ પમાડવા જેટલી શ્રેષ્ઠ શક્તિ જે સુચારીત્ર સંપન્ન સાધુ મુનીરાજોમાં રહેલ છે, તે અન્ય વ્યકિતમાં નથીજ. મનુષ્ય લોકમાં સર્વ શક્તિમાન ચક્રવર્તી જેવાઓને પરાજીત કરનાર બાહુબલીજીએ તાકાદ પ્રાપ્ત કરી હોય તો તે ફકત પૂર્વભવમાં સાધુ મુનીરાજોની કરેલ સેવા-ભક્તિનોજ પ્રભાવ છે. અનાજ ભરવા માટે અવસ્ય બારદાન (કોથળા)ની આવસ્યકતા રહે છે જ છતાંય કિંમત તે બારદાનની નહિં પરંતુ અનાજની બજારમાં અંકાય છે, તેમ પુત્ર વિનાનો પિતા અવસ્ય વાંઝીયો જગતમાં મનાય છે. પરંતુ પુત્ર જો સ્વમુખે તેમ પિતાને સુણાવે તો તે પુત્ર સપુત ને બદલે કપુતની જ કોટીમાંજ મુકાય છે. દુનીઆમાં પણ કહેવત છે કે-'બેટા બનીને ખાઈ શકાય છે પરંતુ બાપ બનીને ખાઈ શકાતું નથીજ, આ બીનાઓ વ્યવહાર કુસળ મનુષ્યો સુંદર રીતીએ સમજી શકે છે. સર્વ ધર્મોનો આદેશ છે કે વડીલ પ્રત્યે વિનય ભાવ દર્શાવો ત્યારે આજના વિસમી સદીના એજયુકેટેડો (સુશિક્ષણ પામેલાઓ) વડીલોને એક તુચ્છ વસ્તુ સમજી એજ વડીલો પાસે સેવા-ચાકરી કરાવવાની આકાંક્ષાઓ જન્માવે છે. એ મહાન દુઃખનો વિષય છે. વડીલો પ્રત્યે વિનય ધર્મનું પાલન કરતાં સંપ્રતિ મહારાજા ગુરૂ મહારાજશ્રી આર્ય સુહસ્તિ મહારાજા પાસે પ્રાર્થના કરે છે કે:—

भवत्पाद प्रसादेन, साम्राज्यमिदमद्भुतं,
प्राप्तं स्वामिन् मयेदानीं, यत्कर्तव्यं तदादिश.

અર્થ-હે સ્વામી ! આપની કૃપાદૃષ્ટિથી મને આ અદ્દભુત સામ્રાજ્ય પ્રાપ્ત થયું છે, તે હવે મને કરવા લાયક યોગ્ય કાર્ય ફરમાવો. આ વિનયોક્ત વચન ઉચ્ચારનાર સંપ્રતિ મહારાજા એક જૈન શાસનમાં અત્યુત્તમ વ્યકિત થયેલ છે. તેમનુંજ અનુસરણ આજનો ઉદ્દામવાદી વર્ગ પસંદ કરસે તો અવસ્ય પરમ સુખને પામી શકશે, એનિસંદેહ બીના છે. શાસન દેવ સર્વને સદ્દબુદ્ધિ સમર્પો !

અર્હત દર્શન અને ઈશ્વર.

લેખકઃ—**મણીશંકર કાળીદાસ વૈદ્યશાસ્ત્રી. (જામનગર)**

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૭ થી અનુસંધાન)

શાંકરવેદાંત દર્શન, આ વિશ્વના પદાર્થોનો સમૂહ તેમજ તેની વિવિધ સત્તા, નો સ્વીકાર કરતું નથી. અને **ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या** એ તેનું પ્રાધાન્ય સૂત્ર છે. આ જગતમાં એક બ્રહ્મજ અખંડ અદ્વિતિય સત્તા છે. તે બ્રહ્મ વિના બીજા જે જીવ, અજીવાદિ જે કાંઈ કહેવાય છે તે અસત્ છે. આજે હું તું અને તે એમ જે દ્વૈત-બીજાપણું દેખાય છે તે સર્વ અવિદ્યા-અજ્ઞાનનું જ પરિણામ છે. વાસ્તવિક હું, તું કે તે કાંઈ નથી પણ એક બ્રહ્મ જ છે. જેને **एक मेवा द्वितीयम्** એક અદ્વિતીય બ્રહ્મ જ છે, તે નિત્ય નિરંજન છે. પણ માયાના આશ્રયથી

વિશ્વમાં " ઇશ્વર " તરીકે જણાય છે. એ પોતે બ્રહ્મ નિત્ય-નિરંજન અદ્વિતિય હોય; છતાંય પણ અવિદ્યાના કારણે વિવિધ નામ રૂપે બની જીવ રૂપે પ્રતીત થાય છે. યણ વાસ્તવિક રીતે જોતાં કેવલ બ્રહ્મજ છે. માયાનો વિવેક રાખીને જોઈયે તો તે શુદ્ધ છે. તે ઇશ્વર છે. અને અવિદ્યાથી જોઈએ તો તેજ બ્રહ્મ અનંત સંખ્યામાં અનંત વિધ જીવરૂપે જણાય છે. એજ જીવ પોતે ઇશ્વર છે.

યોગદર્શન અને ઈશ્વર

આ ભારત જનની એક પુણ્ય ભૂમિ અને તત્ત્વજ્ઞોની જન્મદાત્રી છે. અનેક તત્ત્વદર્ષીઓ ભારતમાં જન્મ પામ્યા છે અને અન્ય દેશના તત્ત્વજ્ઞોને ભારતના દર્શન વિધાતાના વિચારોથી પોષણુ પણ મળ્યું છે.

હવે યોગદર્શન ઈશ્વર વિષે નીચેનો નિર્ણય આપે છે. **क्लेष कर्म विपाका शयेरे परा मृष्टः पुरुष विशेष इश्वर। तत्रनिरतिशयम् सर्वज्ञत्वबीजम् सपूर्वेषा मपि गुरु काले ना नवच्छेदाति ॥** સમાધિ પાદ ૨૪-૨૬ એવો એક મહાપુરૂષ છે કે જે ક્લેશ, કર્મ, કર્મફલ-વિપાક અને પ્રવૃત્તિથી સંપૂર્ણ નિરાળો છે. અને તેજ ઈશ્વર છે. સંપૂર્ણ, સર્વજ્ઞત્વબીજ તેનામાં વર્તમાન છે, કાળથી પણ તે અવિચ્છિની છે, તેમજ પૂર્વાચાર્યોનો પણ ગુરૂ છે. આ પણ ભારતનો એક નિષ્કલંક પૂર્ણ સત્ત્વવાદ છે.

આ દૃષ્ટિએ જોઇએ તો યોગદર્શનની માન્યતા પ્રમાણે સૌથી શ્રેષ્ઠ, પ્રાજ્ઞમાં પણ પ્રાજ્ઞ એવો જે પુરૂષ વિશેષ, તેજ ઈશ્વર છે. આ માન્યતા માટે તેજ દર્શનના વૃત્તિકાર ભોજરાજ જણાવે છે કેઃ—

वृष्टाघ अल्पत्व महत्ता दीनाम् धर्माणां सातिशयातानाम् काष्टा प्राप्तिः यथा परमाणा वल्वत्वस्य आकासे महत्वस्य। एवम् ज्ञानादयोऽपि चित्त धर्मास्तारतम्येन परिदृश्यमानाः केचिन्निरति शयतामा पादयन्ति। यत्र चैत्रे निरतिशयाः स इश्वरः॥

અલ્પત્વ, મહત્વ, વિગેરે ધર્મકિતાં તારતમ્ય જણાય છે. પરમાણુ નાનામાં નાનું અને આકાશ મહાનમાં મહાન છે. એજ પ્રમાણે જ્ઞાનાદિ ચિત્તધર્મોમાં પણ તારતમ્ય દેખાય છે. એટલે કોઇ એક એવું સત્ત્વ છે કે જ્યાં ઉત્કર્ષની છેલ્લી મર્યાદા આવે છે. જે મહાપુરૂષને વિષે સર્વજ્ઞાનાદિ ગુણો ઉત્કર્ષની પરાકાષ્ટાએ પામે તેજ ઇશ્વર.

સાંખ્ય દર્શન અને ઇશ્વર

સાંખ્ય દર્શન બીજી ઘણીખરી બાબતોમાં યોગદર્શનથી જુદું પડતું નથી. પણ ઇશ્વર તત્ત્વની માન્યતામાં યોગદર્શનથી જુદું પડે છે. યોગદર્શનની ઈશ્વરની માન્યતાનો તે સ્વીકાર કરતું નથી. **इश्वरा सिद्धेः विषया ध्याव** પ્રમાણોવડે ઈશ્વરની સિદ્ધિ થઈ શકતી નથી એ સૂત્રથી સાંખ્ય દર્શન, ઈશ્વર તત્ત્વનો કે બીજા દર્શનોના પ્રમાણો સ્વતંત્રપણે સ્વીકાર કરતું નથી. છતાં તેને આસ્તિક દર્શન તરીકે સ્વીકારવામાં આવ્યું છે. વિજ્ઞાન ભિક્ષુ જેવા વિદ્વાનોએ તો સાંખ્યને નિરિશ્વરવાદી (દર્શન) તરીકે માન્યું છે.

અપૂર્ણ.

પ્રશ્નોત્તરો.

પ્રશ્નકાર ઝવેરચંદ છગનલાલ સુરવાડાવાલા.
ઉત્તરદાતા—પન્યાસજી શ્રીધર્મવિજયજી ગણિ મહારાજ.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૬ થી અનુસંધાન)

પ્રશ્ન–૬ વિપાકોદય અને પ્રદેશોદય એટલે શું ?

જવાબ—વિપાકોદય-બંધ સમયે જે પ્રકૃતિ જે સ્વરૂપે બંધાયેલ હોય તે પ્રકૃતિ તે સ્વરૂપે ઉદયમાં આવે તેને વિપાકોદય કહેવાય. પ્રદેશોદય-જે પ્રકૃતિ જે સ્વરૂપે બંધાયેલ હોય તે પ્રકૃતિ તે રૂપે ઉદયમાં ન આવતાં, પોતાનું નામ કાયમ રાખીને સમાન જાતીવાળી અન્ય પ્રકૃતિના વિપાકોદય સાથે મંદોદયથી ભોગવાઈ જાય, તેને પ્રદેશોદય કહેવાય.

પ્રશ્ન ૭–ઉપશમ સમકિત ભવચક્રમાં ભમતાં ઉત્કૃષ્ટથી પાંચવાર પ્રાપ્ત થાય છે. તો જઘન્યથી કેટલીવાર પ્રાપ્ત થાય ?

જવાબ—જઘન્યથી એકજવાર પ્રાપ્ત થાય, આમાં એટલું વિશેષ સમજવું કે કર્મ ગ્રંથકારના મત પ્રમાણે અવશ્ય ઓછામાં ઓછું એકવાર પણ ઉપશમ સમકિત પ્રાપ્ત થવું જોઇએ, કારણકે તેઓની એ માન્યતા છે, કે અનાદિ મિથ્યા-દૃષ્ટિને સર્વથી પહેલાં જે સમકિત હોય તે ઉપશમજ હોય. પરંતુ સિદ્ધાંતકારના મતે એવો એકાંત નિયમ નથી કે અનાદિ મિથ્યાદષ્ટિને પહેલાં ઉપશમ સમક્તિજ હોય, ઉપશમ પણ હોય, તેમજ પ્રબલ વિશુદ્ધિવાળા આત્માને સર્વથી પહેલાં ક્ષયોપશમ સમકિત પણ હોય, આમ સિદ્ધાંતકારની માન્યતા મુજબ અનાદિ મિથ્યાદૃષ્ટિ આત્મા પ્રથમ જો ક્ષયોપશમ સમકિતજ પામે, અને એમાંથી ને એમાંથી (અથવા પ્રતિપાતિ થઇ પુનઃ ક્ષયોપશમ પામીને) ક્ષાયિક સમકિતને પ્રાપ્ત કરે, તો તેને સમગ્ર ભવોની અપેક્ષાએ એકવાર પણ ઉપશમ સમક્તિ ન હોય.

પ્રશ્ન ૮–ઉપશમ સમકિતનાં ૪ થી ૧૧ સુધી આઠ ગુણસ્થાનકો હોય છે, આમાં સાતમા ગુણસ્થાનક પછીના જીવોને ક્ષાયિક સમકિત હોવા સંભવ છે. તો જ્યાં ક્ષાયિક વર્ત્તતું હોય ત્યાં ઉપશમ શી રીતે સંભવી શકે ?

જવાબ—'સાતમા ગુણઠાણા પછી ક્ષાયિકજ ઘટી શકે' એ માનવું ભૂલ ભરેલું છે. ક્ષાયિક હોય અથવા ઉપશમ પણ હોય. બદ્ધાયુષ્ક ક્ષાયિક સમકિતવાળો આત્મા ઉપશમ શ્રેણી ઉપર ચઢી શકે છે. અને ઉપશમ સમકિતવાળો પણ ચઢી શકે છે. તાત્પર્ય એ કે ઉપશમ સમકિત માટે ૪ થી ૧૧ સુધીનાં ગુણસ્થાનકો કહ્યાં છે તે બરાબર છે.

એક જીવની અપેક્ષાએ એક પ્રકારનું જ સમકિત હોય. એટલે જેને ક્ષાયિક હોય તેને તે સમયે ઉપશમ ન હોય અને ઉપશમ હોય તેને ક્ષાયિક ન હોય. પરંતુ અનેક જીવોની અપેક્ષાએ એ બન્ને પ્રકારનાં સમકિત ૮-૯-૧૦-૧૧ એ ચારે ગુણઠાણાઓમાં હોય.

પ્રશ્ન ૯–ક્ષયોપશમ સમકિત આખા ભવચક્રમાં ઉત્કૃષ્ટથી અસંખ્યવાર પામે, તો જઘન્યથી કેટલીવાર પામે ?

જવાબ–જઘન્યથી છેવટ એક વાર પણ પામવું જ જોઇએ, કારણકે ક્ષયોપશમ સિવાય ક્ષાયિક સમકિત ન પામી શકે.

પ્રશ્ન ૧૦–ક્ષયોપશમ સમક્તિવાળો જીવ ઉત્કૃષ્ટ વિશુદ્ધિના પરિણામે ક્ષાયિક જ પામે, કે ઉપશમ સમક્તિ પણ પામે ?

જવાબ–ક્ષયોપશમમાંથી જેમ ક્ષાયિક સમક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે, તેમ ઉપશમ શ્રેણી ઉપર ચઢનારા જીવોને ઉપશમ સમક્તિ પણ પ્રાપ્ત થાય છે, એટલે કે વિશુદ્ધ પરિણામી આત્માને ક્ષયોપશમમાંથી ઉપશમ અને ક્ષાયિક એ બન્ને પ્રકારના સમક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે પતિત પરિણામીને મિથ્યાત્ત્વ પણ પ્રાપ્ત થાય છે.

પ્રશ્ન ૧૧–ક્ષયોપશમ સમક્તિમાં એકનો વિપાકોદય અને છનો પ્રદેશોદય સતત ચાલુ હોય છે, તેમ બંધ પણ હોઈ શકે છે ?

જવાબ–ક્ષયોપશમ સમક્તિમાં દર્શન સપ્તકમાંથી એક પણ પ્રકૃતિનો બંધ ન હોય. એ પણ ધ્યાનમાં રાખવું કે દર્શન મોહની ત્રણ પ્રકૃતિમાંથી બંધ તો મિથ્યાત્ત્વ મોહનો જ હોય છે, મિશ્ર અને સમક્તિમોહનો બંધ ન હોય. મિશ્ર તથા સમક્તિ મોહ એ બન્ને પ્રકૃતિઓ મિથ્યાત્ત્વનાં દલિકોનું જ રૂપાંતર છે. મિથ્યાત્ત્વના દલિકો વિશેષ વિશુદ્ધિથી શુદ્ધ થાય તે સમક્તિ મોહ, અધકચરા શુદ્ધ થાય તે મિશ્રમોહ, અને જેવાને તેવા મલિન રહ્યા. તે મિથ્યાત્ત્વ મોહ તરીકે જ રહ્યા એમ સમજવું.

પ્રશ્ન ૧૨–ક્ષયોપશમ સમક્તિનો ઉત્કૃષ્ટ છાસઠ સાગરોપમથી અધિક કાળ કહ્યો છે, તો શું તેટલો કાળ એક સરખું તે ટકી શકે છે ?

જવાબ–હા, તે એક સરખું અવિચ્છિનપણે તેટલો કાળ રહી શકે છે, તે પછી ક્ષાયિક સમક્તિ થાય અથવા ક્ષયોપશમને વમીને મિથ્યત્ત્વે જાય.

પ્રશ્ન ૧૩–ક્ષયોપશમ સમક્તિનો જઘન્યથી કેટલો કાળ જાણવો ?

જવાબ–જઘન્યથી અંતર્મુહૂર્ત્ત કાળ જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૪–ક્ષાયિક સમક્તિ દર્શન સપ્તકની સાતે પ્રકૃતિ ક્ષીણ થવાથી પ્રાપ્ત થાય છે, તો તે બંધ સત્તા ને ઉદય એ ત્રણ પ્રકારે ક્ષીણ થાય છે, કે અમુક પ્રકારે થાય છે ?

જવાબ–ક્ષાયિક સમક્તિ, દર્શન સપ્તકનો સપૂર્ણ ક્ષય થવાથી જ થાય છે. એટલે ક્ષાયિક સમક્તિ થયા પછી દર્શન સપ્તકનો બંધ સત્તા અને ઉદય એમાંથી એક પણ ન હોઇ શકે.

"તીર્થોદ્ધાર અને સાહિત્યોદ્ધારની મહત્તા ઉપર શ્રી જમનાદાસ ઉદાણીનું મનનીય પ્રવચન"

થાણુનગર જેવા પવિત્ર અને પ્રાચીન તીર્થધામમાં શ્રી ભાગવતિ દીક્ષા મહોત્સવનો માંગલિક પ્રસંગ હોઈ ચતુર્વિધ સંઘ ઉપસ્થિત હોય અને પૂજ્યપાદ આચાર્યદેવ શ્રી જિનરિદ્ધિસૂરિજી મહારાજ સાહેબ અધ્યક્ષસ્થાને વિરાજમાન હોઇ તેવા અસામાન્ય પ્રસંગે "તીર્થોદ્ધાર અને સાહિત્યોદ્ધાર"ના વિષય ઉપર પ્રવચન કરવા મને નિમંત્રણ આપી મોટપ બતાવી છે. માત્ર વિવેકને ખાતર હું આમ કહું છું તેમ આપ નહિ માનતા. આપે મને નિમંત્રણ આપી આપની વિશાળતા પ્રદર્શિત કરી છે.

તીર્થોદ્ધારનાં વિષયપર બોલતાં મારે મૂર્તિપૂજાનું સમર્થન કરવું પડે તેમ છે. જન્મે અને આચારે હું સ્થાનકવાસી જૈન છું. સામાન્ય માન્યતા એવી છે કે સ્થાનકવાસી જૈનો મૂર્તિપૂજાના વિરોધી છે. આવી માન્યતા પ્રચલિત હોવા છતાં મૂર્તિપૂજક સંપ્રદાયનો શ્રી સંઘ અમૂર્તિપૂજક જૈનને તીર્થોદ્ધાર પર પ્રવચન કરવા નિમંત્રણ આપે, તેમાં ઓછી વિશાળતા નથી. તે ઓછી ઉદારતા નથી. આપની આવી વિશાળદૃષ્ટિ અને ઉદારવૃત્તિ માટે આપને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે. અને મને નિમંત્રણ મળવા બદલ હું મારા પોતાના પણ ધન્યભાગ સમજું છું. અને આપનો ઉપકાર માનું છું.

આજના પ્રવચનનો વિષય "તીર્થોદ્ધાર અને સાહિત્યોદ્ધારની મહત્તા" એ રાખવામાં આવ્યો છે. તીર્થો અને સાહિત્ય માનવજીવનના ઉત્કર્ષ માટે કેટલાં જરૂરી છે. તે વાત આજના પ્રવચનમાં મારે સિદ્ધ કરવાની છે. તીર્થો અને સાહિત્યો સંબંધે લગભગ ઘણાખરા સંપ્રદાયોના ધર્મશાસ્ત્રોએ મનનીય ઉલ્લેખો કરેલા છે. શાસનકારો, સમાજશાસ્ત્રીઓ, નીતિકારો અને શિક્ષણકારોએ પણ તીર્થો અને સાહિત્યોની ઉપયોગિતા સંબંધે ઘણું ઘણું જણાવ્યું છે. તીર્થોદ્ધાર અને સાહિત્યોદ્ધાર માટે લગભગ દરેક સંપ્રદાયોએ પ્રસંગોપાત ભગિરથ પ્રયાસો પણ કર્યા છે. તેના જવલંત વર્ણનો આપણે શાસ્ત્રો અને કથાઓમાં વાંચીએ છીએ, અને કેટલાક પ્રસંગો તો આપણે નજરે પણ જોયા છે.

આમ છતાં તીર્થો અને સાહિત્યની મહત્તા આમ જનતા પૂર્ણપણે સમજતી નથી. એમ મારૂં માનવું છે. મારા બોલ આપને કદાચ આક્ષેપરૂપ લાગશે. પરંતુ હું વિનયપૂર્વક કહું છું કે તે વાત ખરી છે. તીર્થો અને સાહિત્યોનાં મૂલ્યો આમ જનતાએ આંકયા હોત, તેનો વિશેષમાં વિશેષ ઉપયોગ કર્યો હોત, તેમાંથી ધર્મ

પ્રેરણા અને જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યાં હોત તો આપણી (ભારતવાસીઓની) અત્યારના જેવી દુર્દશા થવા પામી હોત જ નહિ. એક પ્રસંગે મેં જણાવેલ કે હિન્દુસ્તાનમા જ્ઞાનના ભંડારો ભર્યા છે. છતાં લોકો અજ્ઞાન છે. ભરતખંડમાં એવાં તો પવિત્ર પ્રેરણાદાયક અને રમણીય તીર્થધામો છે કે જેના દર્શનથી મનના પરિતાપ સમાઇ જાય છે, બુદ્ધિ નિર્મળ થાય છે, ચિત્તમાં આનંદ વ્યાપે છે. અને પ્રભુતાનો ખ્યાલ આવે છે. છતાં પણ માનવો આવા તીર્થધામોનો લાભ લેતા નથી. તે દુર્ભાગ્ય છે. ચાર વેદો, ઉપનિષદો, છ દર્શનો, સ્મૃતિઓ–ગીતા–ભાગવત–રામાયણ–મહાભારત–જૈન આગમો. અને અપૂર્વ એવા જૈનદર્શનશાસ્ત્રો મોજૂદ હોવા છતાં, આપણે કેટલાં બધાં અજ્ઞાન છીએ તેનો વિચાર કરો.

જગતના કોઇ પણ દેશના મહાપુરૂષોએ આવા જ્ઞાનભંડાર સરજ્યા નથી. પરમ પરોપકારી તીર્થંકરો અને મહાન પૂર્વજોએ આપણા કલ્યાણ માટે આવા વિપુલ જ્ઞાનના ભંડારોની આપણને નવાજેશ કરી છે ? છતાં પણ આપણે તેનો લાભ લીધો નથી. આપણે તો અજ્ઞાનતામાં રીબાવવું છે, અજ્ઞાનતાના કારણે પ્રાપ્ત થતાં સર્વ દુઃખો અને યાતનાઓને ભોગવવાં છે. આજીવન અને તેની મહત્તાને જાણવી નથી. જીવનને ગમે તેમ વિતાવી બરબાદ કરવું છે, અને વળી ફરીથી ચોરાસીના ફેરામાં ધકેલાવું છે. કહો જોઇએ આ કોનો દોષ છે ? મારો આક્ષેપ ખરો છે કે ખોટો ?

તીર્થોથી ભારત કેટલું સુશોભિત બનેલું છે, તેનો તમોને ખ્યાલ છે ? જુદા જુદા સંપ્રદાયોનાં ઘણાંખરાં તીર્થો મારાં જોએલાં છે. જગતના પરિતાપથી થાકેલા, પોતાના કર્મના ભારથી અને પશ્ચાત્તાપથી દુઃખી થએલા, વિકારો અને દુરાચારથી પશુ જેવાં બનેલાં અને અજ્ઞાનથી મૂંઝાએલા, અનેક માનવોને તીર્થધામના આશ્રયે દુઃખમુક્ત તેમજ અજ્ઞાનમુક્ત કર્યા છે. આ વસ્તુ મેં મારી નજરોનજર જોએલી છે. તીર્થોના પ્રભાવનો હું તમને બે ત્રણ ઉદાહરણો આપું.—

આજથી ચોવીસ વર્ષો પહેલાંની વાત છે. ત્યારે મારી ઉંમર બાવીસ વર્ષની હતી. કલકત્તાથી હું અને જગજીવન નામના એક ભાઇ એમ અમે બે જણા સીમલા ગયા હતા; ત્યારે આગલી લડાઇ ચાલતી હતી. સીમલામાં સરકાર તરફથી અમારે અમુક પરવાનાઓ મેળવવા હતા, કાર્ય ઘણું કઠીન અને અસંભવિત હતું, દેખીતી રીતે આશાનું કોઇ કારણ ન હતું. અમો બપોરે બે વાગે સીમલા પહોંચ્યા. નાહિ ધોઇ નવકારમંત્ર ભણી સમગ્ર હિંદુસ્તાનની બધી યે રેલ્વેઓના કન્ટ્રોલરને મળવા અમે તેમની ઓફિસે ગયા, ત્રણેક વાગ્યા હતા. જગજીવનભાઇ બહાર બેઠા અને હું સાહેબને મળવા તેના ખંડમાં ગયો. પંદરેક મિનિટ મેં કન્ટ્રોલર સાહેબથી વાતચિત કરી, મારૂં કામ ફત્તેહ થયું. પરવાના સાથે સાહેબના રૂમમાંથી હું બહાર આવ્યો, જગજીવનભાઈ મારી આતુરતાથી

રાહ જોતા બેઠા હતા. મેં તેમને કહ્યુ; "ચાલો ફત્તેહ" **આ પરવાના.** જગજીવનભાઇએ ત્યારે મને શું જવાબ આપ્યો; તે આપને જાણવો છે ?

તેણે કહ્યું; જમનાદાસભાઈ ! તમે અંદર ગયા તેજ વખતે મેં બાધા લીધી; કે "જો કાર્ય ફત્તેહ થાય તો તુરતજ સમેતશિખરજીની યાત્રા કરવી." અને મારા અંતરમાં પડઘો પડયો કે કાર્ય ફત્તેહ છે.

સીમલાથી વળતાં પ્રથમ અમે શિખરજી ગયા. શિખરજી ઉપર મારા ચિત્તે જે આનંદનો અનુભવ કર્યો છે તે આનંદ હજી પણ મને યાદ છે. શિખરજીની ટુંકો ઉપર ફરતાં ફરતાં મને સ્મરણ થયું કે, પરમ ઉપકારક એવા આપણા તીર્થંકરોએ આ સ્થળે કર્મ મુક્ત થઈ-ચિત્તમગ્ન અવસ્થામાં પરમ આનંદ સાથે પરમપદને નિર્વાણને પ્રાપ્ત કર્યું છે.

શિખરજીની ભૂમિની એ પવિત્રતા-એ અલૌકિકતા તેને જૈનોનું તીર્થધામ કેમ ન બનાવે ? જે ભૂમિનાં દર્શન માત્રથી આપણને આપણાં તીર્થંકરો, તેઓએ આપણા ઉપર કરેલા ઉપકારો-અને તેઓએ આપણે માટે બાંધેલા ધર્મનું ભાન અને જ્ઞાન થાય, તે ભૂમિ આપણે માટે તીવ્ર કેમ ન બને ?

આપને એક બીજો પ્રસંગ કહું; આબુજી જવાનું મને ઘણી વખત બને છે. સાતેક વર્ષો પહેલાં ત્યાં બનેલી એક અનુભવ ઘટના હું આપને કહેવા માગું છું. અમેરિકાથી એક શ્રીમંત કુટુંબ હિંદુસ્તાનના પર્યટને આવ્યું હતું. મુંબઇ ઉતરી ત્યાં બે દિન રોકાઇ-તે કુટુંબ આબુજી આવ્યું. ત્યાં પણ બેજ દિવસ રોકાવાનો તેનો ઇરાદો હતો. છતાં બાર દીવસ રોકાણ કરી-રોજ સવારે નાહિ ધોઈ તે કુટુંબ દેલવાડા જતું. અને ત્યાંના જૈન મંદીરોનું નિરીક્ષણ કરતું. આ વાત મારા ધ્યાનમાં હતી. તેમાં એક દીવસે તે કુટુંબ આબુથી વિદાય થાય તે પહેલાં મારે અને તેને વાતચિતનો પ્રસંગ બન્યો, કુટુંબમાં ત્રણ જણાં હતાં. પાંસઠેક વર્ષના સાહેબ, તેમનાં સાઠેક વર્ષનાં પત્નિ અને ત્રીસેક વર્ષનાં પુત્રી હતાં. તેઓની સાથે વાતચીતમાં તેમને ખબર પડી કે હું જૈન છું. જૈન નામ સાંભળી તેઓ ખુશી ખુશી થઇ ગયાં. મેં તેમની ખુશીનું કારણ પૂછ્યું; સાહેબે કહ્યું, "જૈનો તરફ અમોને આકર્ષણ થયું છે. આબુમાં બે દીવસ રોકાવું હતું. આજે બાર દીવસ થયાં. હજી જવાનું મન થતું નથી. અને મારી પુત્રી તો દેલવાડાનાં જૈનમંદીરો જોતાં ધરાતી જ નથી.

સાહેબનો આ જવાબ સાંભળી મેં તેની પુત્રીને કહ્યું, "તમારા અમેરિકામાં ગગનચુંબી પચાસ પચાસ મજલાના મકાનો છે. છતાં તમે અમારા મંદીરોમાં મોહ્યાં ?" મારા આ કટાક્ષના જવાબમાં તે અમેરીકન સન્નારીએ મને જે જવાબ આપ્યો હતો તે મને હજી પણ શબ્દેશબ્દ યાદ છે. જે હું આપને સંભળાવું છું.

"જે રમણીયતા અને જે ભાવના તમારા મંદીરોમાં દેખાય છે, તેવી રમણીયતા અને ભવ્યતા અમેરીકાનાં એક પણ મકાન કે મંદીરોમાં નથી. તમારા મંદીરોનું મેં બારિકમાં બારિક નિરીક્ષણ કર્યું છે. તેનું સ્થાપત્ય અને કળા દીર્ઘકાળ સામે ટકે તેવા, નયન મનોહર, ચીતરંજન, પ્રેરણાદાયક અને ધર્મ ભાવનાને જાગૃત કરનારાં છે.

મંદીરમાંની સર્વ મૂર્તિઓ અને આકૃતિઓનાં આસનો-અંગમરોડ-મુખ મુદ્રાઓ-ભાવદર્શન વગેરે તમારા ધર્મનું, તમારા ધર્મના સ્થાપકોનું-તેઓનાં જ્ઞાન-તપ-અને ત્યાગનું, જૈન શાસન વ્યવસ્થાનું, જૈનોની જાહોજલાલી, વૈભવ કળા-અને ધર્મ પ્રભાવનાનું ભાન કરાવે છે, દેલવાડાના દર્શનથી જૈનધર્મ કેવો હશે તેનો મને ખ્યાલ આવે છે.

પૂજ્ય મહારાજ સાહેબ, શ્રાવકો અને શ્રાવિકાઓ આપના તીર્થધામના દર્શનથી પરદેશી અને પરધર્મી લોકો પણ કેટલો આનંદ પામ્યા હતા, અને જૈનધર્મ તથા જૈનો સંબંધે તેઓને કેટલું ઉત્તમ ભાન થયું હતું. **આ છે તીર્થોની મહત્તા.**

શીખરજી અને આબુરાજની મેં તમોને વાત કહી, તેવીજ અનેક વાતો શ્રી શેત્રુંજય, શ્રી ગીરનાર, શ્રી કેશરીયાજી, આદિ તીર્થોની છે.

મહારાજ સાહેબ! આપની પ્રેરણા તથા પરિશ્રમ અને ભાવિક શ્રાવકોની સહાયતાથી થાણા નગરના પ્રાચીન તીર્થનો ઉદ્ધાર થયો છે, તે જોઈ મને ઘણો આનંદ થાય છે. અને હું ઈચ્છું છું કે આ પવિત્ર તીર્થના દર્શનથી જૈન તેમજ જૈનેતર જનતાને આનંદ અને ધર્મ પ્રાપ્ત થાય.

તીર્થોના સંબંધમાં મને એકાદ દુ:ખની પણ વાત કહેવી પડે છે, આપણે આપણા તીર્થની ઉપયોગિતા અને મહત્તા ભૂલી ગયા છીએ. પરિણામે તીર્થો પાછળ જૈનો તરફથી ખરચાયેલ કરોડો રૂપીયાનો યોગ્ય લાભ આપણે લેતા નથી. વળી તીર્થો જીર્ણ થાય છે અને તીર્થોથી મલવાનો આધ્યાત્મિક લાભ પણ આપણે ગુમાવીએ છીએ. ઉપરાંત તીર્થોની માલેકી, વહીવટ, ભોગવટો, અને પ્રતિષ્ઠાના સંબંધમાં પણ આપણે ઘણા ઝગડાઓ ઉભા થવા દીધા છે. આ સર્વ આપણી દુર્દશા બતાવે છે. તેથી શાસનની કુસેવા થાય છે. અને આપણો ધર્મ તથા સમાજ વગોવાય છે. આપણે પોતે આ પાપના ભાગી થયા છીએ. આ સ્થિતિ લવલેશ પણ બરદાશ કરવા જેવી નથી. માટે મારી સર્વે જૈનોને આગ્રહભરી વિનંતિ છે કે તીર્થોનો ઉદ્ધાર કરો, તીર્થોની રક્ષા કરો. તીર્થોની ભવ્યતા અને પવિત્રતા વધારો, અને તીર્થોની મહત્તા સમજી આપણા જીવનના વિકાસ અર્થે તેનો સદુપયોગ કરો.

હવે મૂર્તિ પૂજાના સંબંધમાં બે શબ્દો કહ્યા સિવાય તીર્થોદ્ધારનો વિષય સમેટી શકાય તેમ નથી. પ્રથમ તો એ જાણી લેવું જોઇએ કે કોઈ અદીઠ, અદશ્ય વસ્તુ, કે વ્યક્તિ તીર્થ બની શકતી નથી. કહેવાની મતલબ એ છે કે તીર્થ પ્રત્યક્ષ છે. આંખથી જોઈ શકાય છે. પછી તેનું સ્વરૂપ ગમે તે પ્રકારનું હોય, સ્વરૂપ કરતાં વિશેષ મહત્ત્વની વાત ગુણની છે. જીવંત વ્યક્તિ, દાખલા તરીકે, માતા, પિતા, ગુરૂદેવ વગેરે, પ્રતિમા, પાદુકા, છબી, ભૂમિ, સ્મારક, પ્રતિક, એંધાણી, વગેરે વગેરે અનેક વ્યક્તિઓ કે વસ્તુઓ આપણે માટે તીર્થરૂપ બને છે. તે દરેકમાં ગુણોનું આરોપણ જેટલા પ્રમાણમાં થએલું હોય છે, તેટલા પ્રમાણમાં તે સર્વ આપણને વધારે ભવ્ય, વધારે સુંદર, વધારે પ્રિય અને વધારે પ્રેરણાદાયક જણાય છે.

ગમે તેવો શીલ્પકાર કે ચીત્રકાર તીર્થંકરોની આબેહુબ કાંતિ આલેખી શકે નહિ, છતાં પણ તીર્થંકરની પ્રતિમા સામે બેસતાં. અગર તેના દર્શન કરતાં તેમના ગુણોનું આપણા ચીત્તમાં સ્મરણ થાય છે. તેથી આનંદ થાય છે. અને આપણને પ્રભુતાનું ભાન થાય છે. મૂર્તિપૂજા આ રીતે સાધન તરીકે પણ બહુજ ઉપયોગી છે, આપને બીજું ઉદાહરણ આપું. આપણો રાષ્ટ્રીય ધ્વજ લ્યો, વસ્તુ જુઓ તો માત્ર લુગડાનો કટકો છે, પરંતુ તેમાં આપણે ગુણોનું આરોપણ કરેલું છે. તે તમને રાષ્ટ્ર ધર્મ, રાષ્ટ્રગૌરવ અને રાષ્ટ્રીયતાનું ભાન કરાવે છે. તે તમને કર્તવ્ય પાલન કરવા, દેશસેવા કરવા, દેશ માટે ભોગ આપવા તત્પર પણ કરે છે. કહેવાની મતલબ એ છે કે ધ્વજમાં પ્રેરણા દેવાની તાકાતના કારણે તે વંદનીય બને છે, તેવુંજ મૂર્તિના સંબંધમાં સમજવાનું છે.

તમે જેના તરફ બહુજ આદરમાન અર્થાત્ પૂજ્યભાવથી જોશો અને જેનું વધારે સ્મરણ કરશો, તેની છાપ તમારા ચીત્ત પર વધારે પડશે. જીન પ્રભુનું જેમ વિશેષ સ્મરણ કરશો તેમ તેની વધારે છાપ તમારા ચીત્ત ઉપર પડશે.

જીન પ્રભુમાં જેટલા વધારે પ્રમાણમાં તમે તલ્લીન-તદાકાર થશો, તેટલા વધારે પ્રમાણમાં તમારા ચીત્તમાં તેઓશ્રી વ્યાપક થશે. ચીત્તને પ્રભુમાં પરોવવા તથા તેમાં તદાકાર થવા તમારે સાધના કરવી પડે છે. આ સાધનામાં મૂર્તિ તમને ઘણી સહાયતા કરે છે. મૂર્તિની પ્રેમભાવે પૂજા કરતાં કરતાં તમને પ્રભુના ગુણોનું સ્મરણ થાય છે. પ્રભુના ગુણોને જાણવાથી તમો તેને પીછાનતા થાવ છો. અને પીછાન થયા પછી તેમાં ઓતપ્રોત થવું સહેલ બને છે. એટલે આ દૃષ્ટિએ પણ મૂર્તિ પૂજા ઘણીજ ઉપયોગી અને ઉત્કર્ષને દેનારી છે. તેથીજ જગતના ઘણા સંપ્રદાયોએ મૂર્તિપૂજાનું અવલંબન સ્વીકાર્યું છે. અમુક સંપ્રદાયો મૂર્તિપૂજામાં માનતા ન હોય તેથી મૂર્તિપૂજાની મહત્તા ઘટતી નથી. અને મારો

તો એવો સુદૃઢ અભિપ્રાય છે કે અમૂર્તિપૂજકે પણ મૂર્તિપૂજાનો કદી વિરોધ કે અવગણુના કરવી નહિ.

આજના પ્રવચનનો વિષય "તીર્થોદ્ધાર અને સાહિત્યોદ્ધારની મહત્તા" છે. તીર્થોદ્ધાર ઉપરનું મારૂં આજનું કથન અહીં પૂરૂં થાય છે. હવે હું સાહિત્યોદ્ધાર સંબંધમાં થોડું કહેવા ઈચ્છું છું જેટલી શાંતિથી તમોએ મને અત્યાર સુધી સાંભળ્યો છે. તેટલીજ શાંતિથી હવે થોડીવાર વધારે સાંભળશો, એવી આશા છે.

અનેક વિષયો અને અનેક સંપ્રદાયોનું સાહિત્ય જગતમાં પથરાએલું છે. તેમાં દીનપ્રતિદીન ઉમેરો થતો જાય છે. તે સંબંધે હું તમોને કાંઈ કહેવા માગતો નથી. હું તો માત્ર જૈનધર્મનું જ્ઞાન આપનાર અને તેનો પ્રચાર કરનાર સાહિત્યો ઉપરજ બે બોલ કહેવાને ઇચ્છું છું. આ સાહિત્યોમાં આપણાં શાસ્ત્રો આવી જાય છે.

સકળ બ્રહ્માંડમાં નિર નિરાળા જીવો માનવજાત પંચમહાભૂત અન્ય વિષયો–પાપ કર્મેન્દ્રિયો, પાંચ જ્ઞાનેન્દ્રિયો, અહવર, ચતુષ્ટય, જીવાત્મા, પરમાત્મા, તીર્થંકરો, દેવો, ત્રણુલોક મુક્તિ આદિ અનેક બાબતોને લગતું સંપૂર્ણ જ્ઞાન જૈન શાસ્ત્રોની અંદર ભર્યું છે. આપણે જૈન તરીકે ઓળખાઇએ છીએ અને જૈન ધર્માનુસાર આ માનવ જીવનનો સદુપયોગ કરી, આપણે જીવનને સાર્થક કરવા ઈચ્છીએ છીએ. પરંતુ હું પૂછું છું, કે જૈન ધર્મે સમજાવેલું જ્ઞાન આપણામાંના કેટલાકને પ્રાપ્ત થયું છે?

યાદ રાખજો કે જ્ઞાન સિવાય કોઈ પણ વિચાર કે કાર્યની તુલના કરી શકાતી નથી. તેમજ જ્ઞાન વગર આ જીવનની મહત્તા કે ઉપયોગિતા સમજી શકાતી નથી. દરેક વાતના ગુણ, દોષ અને પરિણામ ઉપરાંત આપણા હરેક વિચાર વૃત્તિ અને કર્મના પરિણામોને સ્પષ્ટ રીતે જૈનશાસ્ત્રોએ સમજાવેલ છે. છતાં પણ આપણે અજ્ઞાન હોવાથી દરેક પ્રસંગ, દરેક પદાર્થ અને દરેક પરિણામને પીછાની શકતાં નથી. તેમજ આપણુને આપણું પોતાનું પણ વાસ્તવિક ભાન નથી. કયો વિચાર કરવો, કેવી વૃત્તિ કરવી. કેવું કર્મ કરવું. વગેરેનો નિર્ણય કરવાની શક્તિ આપણા પૈકી કેટલામાં છે? જૈન ધર્મમાં વિશ્વનું કલ્યાણ કરવાની શક્તિ હોવા છતાં જૈન ધર્મ વર્તમાન યુગમાં અવગણુના પામે છે. તેનું કારણ શું છે? આપણે જૈનો હોવા છતાં જૈનોને ઉચિત જીવન જીવી શકતાં નથી, તેનું કારણ શું છે? તેનું ખરૂં કારણ એ છે કે આપણુને આપણા ધર્મનું પૂર્ણ જ્ઞાન નથી. હું અગાઉ કહી ગયો તેમ આપણે માટે જ્ઞાનના ભંડારો ભર્યા છે. છતાં આપણે તેનો ઉપયોગ કરતા નથી. પછી દોષ કોનો?

માટે મારો આપ સર્વેને આગ્રહ છે કે ધર્મના જ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરવા ભગીરથ પ્રયાસ કરો, તેમજ તે જ્ઞાનના પ્રચાર માટે પણ ભગીરથ પ્રયાસ કરો. માનવ જીવનથી ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. પરંતુ એક

વાત કહેવાની રહી જાય છે તે એ છે કે અર્થ, કામ અને મોક્ષને અપાવનાર ધર્મજ છે. એટલે ધર્મના સાધન વગર કાંઈ પ્રાપ્ત થવાનું નથી. ધર્મ પાલન વગર કર્મમાંથી મુક્ત થવાતું નથી. ધર્મ વગર આ જીવન નકામું જવાનું છે.

પરંતુ યાદ રાખજો કે જ્ઞાન સિવાય ધર્મ સમજાતો નથી. માટે જ્ઞાનની પ્રથમ જરૂર છે. જ્ઞાન સિવાય તમારા શાસ્ત્રોમાં ભરેલો વૈભવ તમે કેમ પ્રાપ્ત કરવાના હતા? જ્ઞાન સિવાય ચારિત્ર્યને તમે કેમ જાણવાના હતા? જ્ઞાન, તપ, દાન, ભક્તિ, ભાવના વિગેરે અનેક માર્ગે ધર્મને પ્રાપ્ત કરી શકાય છે. તેવી માન્યતા છે. પણ મારો તો એવો મત છે કે જ્ઞાન વગર આપણે તપ, દાન, ભક્તિ અને ભાવના બરોબર આદરી શકતા નથી. જ્ઞાનની આ મહત્તા છે.

તેથી જ્ઞાન પ્રચાર માટે સાહિત્યોદ્ધાર જરૂરી છે. સાહિત્યોદ્ધાર મારફત તમે શાસનની મોટામાં મોટી સેવા કરી શકો છો, આ વાત તમારે ભૂલવી ન જોઈએ, ધર્મના યથાર્થ પાલન માટે અને પ્રચાર માટે સાહિત્યોદ્ધારની ખાસ જરૂર છે. તો ભારપૂર્વક ફરીથી તમોને જણાવું છું અને વિનંતિ છે કે જૈનોનું જે જે સાહિત્ય છે. તેનું જતન કરો; અને સદુપયોગ કરો. તેની પૂરવણીરૂપ નવા સાહિત્યનું સર્જન કરો. આવા કાર્યમાં યથાશક્તિ સહાયતા કરો, અને જૈન સમાજને જ્ઞાનથી વિભૂષિત કરી જગતમાં જૈન શાસનનો દિગવિજય કરો.

અહીંના દેરાસરજીના મુનિમ ભાઇશ્રી મંગળદાસ ત્રી. ઝવેરી તેમના પ્રાચીન સાહિત્ય સંશોધન કાર્યાલય મારફત જૈન શાસનની મહાન સેવા કરી રહ્યા છે. તેમણે પ્રગટ કરેલા ગ્રંથોનું મેં અવલોકન કર્યું છે. તેમની સાહિત્ય સેવાથી હું ઘણોજ પ્રસન્ન થયો છું. તેમના આ સુંદર કાર્યને માટે મારા તેમને અભિનંદન છે. તેમના કાર્યમાં સહાયભુત થનાર ભાવિક સજ્જનોને પણ મારા ધન્યવાદ છે. અને તેમના કાર્યને વધારે જ્વલંત બનાવવા મારી તમો સર્વેને વિનંતી છે.

મારૂં આજનું પ્રવચન હું હવે સમાપ્ત કરૂં છું. આપે મને શાંતિથી સાંભળ્યો તે બદલ આપ સર્વેનો ઉપકાર માનું છું. શ્રીચતુર્વિધ સંઘને વંદના કરી હું હવે વીરમું છું.

જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયનીતિ સૂરિશ્વરજીના ઉપદેશામૃતથી ચિતોડગઢના જિનાલયોના જીર્ણોદ્ધાર માટે મળેલ રકમોની યાદિ

(ગત વર્ષ અંક. ૭–૮ પૃષ્ઠ ૨૩૬ થી અનુસંધાન)

૨૩૦૪૯–૩–૯ આગળના પૃષ્ઠનો સરવાળો.
૫૦૦૧–૦–૦ શેઠ ચુનીલાલ ખુશાલચંદ હ. શેઠ ભગુભાઇ. અમદાવાદ.
૧૦૦૧–૦–૦ શેઠ પુનમચંદ નેમાજી. સાદડી
૮૦૧–૦–૦ શેઠ ન્યાલચંદ હીરાચંદની વિધવા મણી બ્હેન. સાદડી.
૨૦૦–૦–૦ સાધવી શ્રીસૌભાગ્યશ્રીજીના ઉપદેશથી સરકારી ઉપાશ્રય તરફથી.

રૂા. ૩૦૦૫૨–૩–૯

॥ ॐ ह्रीँ नमोऽर्हद्भ्यः ॥

सानुवाद–जीवविचारप्रकरणम्

लेखक–मुनि दक्षविजयजी (पाटण.)

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૩૨ થી અનુસંધાન)

અગ્નિ કણિયાવાળો ભાઠો[1] અગ્નિ વજ્ર[2] તણો વળી,
ઉત્પાત હેતુ જાણુ[3] ઉલ્કાપાત ને વળી વીજળી;
છે અગ્નિ તારાના સમા ખરતા કણો[4] નભથી વળી,
અરણિ[5] ભાનુકાંત[6] ચકમક[7] વાંસ ઘર્ષણનો મળી. (૫)
ભેદ ઇત્યાદિક અગ્નિકાય જીવના જાણવા,

(બાદર વાઉકાયના ભેદ)

તે વાત [1]ઉદ્‌ભ્રામક કહ્યો ઉંચે ભમાવે જે હવા;
રેખા પડે ધુળમાંહિ જેથી વાય જે [2]નીચે રહી,
તે જાણુ ઉત્કલિકા વળી [3]વંટોળીયો વાયુ સહી. (૬)
[1]મહાવાયુ ને [2]શુદ્ધવાયુ ને [3]ગુંજ શબ્દ કરતો વાયુ છે.
[4]ઘનવાત ને [5]તનવાત આદિ વાયુના બહુ ભેદ છે;

(વનસ્પતિના બે મુખ્ય ભેદ અને સાધારણ વનસ્પતિની વ્યાખ્યા)

સાધારણ અને પ્રત્યેક બે ભેદો વનસ્પતિના ગણો,
જે અનંત જીવની એક કાયા તેહ સાધારણ [1]સુણો. (૭)

मूल–कंदा अंकुर–किसलय,–पणगा–सेवाल–भूमिफोडा य ।
अल्लयतिय–गज्जर–मोत्थ,–वत्थुला–थेग–पल्लंका ॥९॥
कोमलफलं च सव्वं, गूढ–सिराइं सिणाइ–पत्ताइं ।
थोहरि–कुंआरी–गुग्गुलि,–गलो य पमुहाइ छिन्नरुहा ॥१०॥

---

૧ ભઠ્ઠી યા ભરસાડનો. ૨ શત્રુપર ફેંકતાં વજ્રમાંથી અગ્નિ ઝરે તે. ૩ ભાસમાંનો અગ્નિ. ૪ આકાશમાંથી. ૫ અરણી વગેરેના સ્વજાતીય બે કકડાના ઘસારાથી ઉત્પન્ન થતો અગ્નિ. ૬ સૂર્યકાંત મણિથી ઉત્પન્ન થતો અગ્નિ. ૭ ચકમક એ એક જાતનો પત્થર છે, તેને લોખંડ સાથે ઘસવાથી અગ્નિ ઉત્પન્ન થાય છે. ॥૫॥

૧ ભૂમિથી આકાશમાં તીર્ચ્છો ચઢતો વાયુ. ૨ આકાશમાંથી તીર્ચ્છો ભૂમિપર ઉતરી. ૩ ભૂમીથી સીધો આકાશમાં ચક્રાકારે ચઢતો વાયરો ॥૬॥

૧ ઘણા ગાઉ સુધી આકાશમાં ધૂળ ચઢે છે તે આંધી, ૨ મંદવાયુ. ૩ ઘુંઘવાટ કરતો વાયુ. ૪ પૃથ્વીઓની નીચેનું ઘન વાયુમંડલ. ૫ પૃથ્વીઓની નીચેનું પાતળું વાયુમંડલ. ૬ જાણો ॥૭॥

રાધનપુરી ભાઈઓનું આનંદ સંમેલન.

રાધનપુરી ભાઇઓનું આનંદ સંમેલન તા. ૨૮-૧૨-૪૧ ના સવારના ૯ વાગે મરિન ડ્રાઇવ ઉપર આવેલા ગિરિકુંજ પાસેના લગ્નમંડપમાં શ્રીમાન શેઠ રામદેવજી પોદારના અધ્યક્ષસ્થાને ભરવામાં આવેલ, સભામાં રાષ્ટસેવક માજી વડા પ્રધાન બાળા સાહેબ ખેર, કે. આર. પી. શરાફ, ચુનીલાલ દેવકરણ નાનજી, ગોરધનદાસ પી. સોનાવાળા, જીવતલાલ પ્રતાપસી, રાવસાહેબ કાંન્તીલાલ ઈશ્વરદાસ, મોતીચંદ ગીરધરલાલ કાપડીયા, સર મણીભાઈ નાણાવટી, હેમચંદ મોહનલાલ, લલુભાઈ દીપચંદ, ધનજી દેવશી, માણેકલાલ ચુનીલાલ, રણછોડભાઇ રાયચંદ, પરમાણંદ કુંવરજી આદિ અનેક માનવંતા મહેમાનો અને રાધનપુરી બંધુઓથી મંડપ ખીચોખીચ ઉભરાઇ રહ્યો હતો. પ્રારંભિક વિધિ વિધાન બાદ તાળીઓના ગડગડાટ વચ્ચે શ્રીયુત વકીલે નીચેનું નિવેદન પોતાના બુલંદ અવાજે સભાજનો સન્મુખ રજુ કર્યું હતું.

માનનીય પ્રમુખશ્રી, પરમ માનનીય બાળા સાહેબ ખેર, રાધનપુરી બંધુઓ તથા માનવંતા મહેમાનો.

અમારા આમંત્રણને માન આપી આપ અત્રે વખતસર પધાર્યા છો તે માટે શ્રીયુત ગીરધરલાલ તથા હું એમ અમો બન્ને આપનો અંતઃકરણપૂર્વક આભાર માનીએ છીએ.

આજે એવા એક શ્રીમાન્ ગૃહસ્થને પ્રમુખસ્થાને મેળવવા અમો ભાગ્યશાળી થયા છીએ કે જેઓની જાહેર કારકીર્દિ મનુષ્ય જાતની સેવામાં તરબોળ છે. જેઓના દાનનો ઝરો ન્યાતજાતના ભેદ ભાવ વગર બધાને માટે ખુલ્લો છે. જેઓશ્રીએ લાખો રૂપિયા પોતાની જન્મભૂમિ નવલગઢમાં હાઈસ્કૂલ-કોલેજ-રસ્તા બનાવવા પાછળ ખરચ્યા છે. પોતાના નિવાસ-સ્થાન સાંતાક્રૂઝમા જેમણે કેળવણીના પ્રચાર અર્થે હાઈસ્કૂલ, મંદિર તથા હોસ્પિટલ પાછળ રૂપિયા ત્રણ લાખનું દાન કર્યું છે. મુંબઈમાં જેઓશ્રીએ લગભગ સાત લાખ રૂપિયાના ખરચે આયુર્વેદીક કોલેજ-હોસ્પિટલ તથા કોમર્સ કોલેજ પાછળ આપ્યા છે, જેઓની ડીકશનરીમાં કોઈપણ જાહેર કાર્ય માટે ના જેવો શબ્દ નથી; એવા ચરિત્રશાળી સખીદિલના પુરુષ આજના અમારા નાના સરખા સંમેલનમાં પ્રમુખસ્થાને બિરાજે એ અમારાં અહોભાગ્ય છે.

અમારાં વધારે સદ્‌ભાગ્ય તો એ છે કે આ ઈલાકાના માજી વડા પ્રધાન પરમ માનનીય, પ્રાતઃ સ્મરણીય, સેવાની મૂર્તિ, શ્રીમાન બાળા સાહેબ ખેરે અમારા આમંત્રણને માન આપી અત્રે પધારી અમારૂં આંગણું પોતાના પવિત્ર પગલાથી પાવન કરેલ છે અને તે માટે આપણે બધા તેઓશ્રીના આભારી છીએ.

શ્રીયુત ગીરધરલાલને ત્યાં આજે લગ્ન જેવો શુભ પ્રસંગ છે. તથા ચર્ચગેટ રેકલેમેશન ઉપર બંધાતા મારા નવીન ગૃહની વાસ્તુક્રિયા આજેજ છે. આ બંને શુભ પ્રસંગોએ અમો રાધનપુરની પ્રજાની કંઈક સેવા બજાવીએ એવી સદ્‌ભાવનાથી આપને અત્રે પધારવા અમોએ એકત્ર આમંત્રણ કર્યું છે.

રાધનપુરનો ઇતિહાસ આવી જાતના ઉદાર કાર્યો માટે મશહુર છે. આ સંબંધે થોડો ઉલ્લેખ આપની સમક્ષ રજુ કરૂં તો અસ્થાને નહિ ગણાય.

આપણી જાણની બહાર, પરંતુ ધાર્મિક વૃત્તિથી પ્રેરાઈને, ઉદાર સખાવતી કાર્યોની યાદ જેઓની હજુ તાજીજ છે, એવા આપણા વડવાઓ રાધનપુરમાં મંદિરો, ઉપાશ્રયો, કુવાઓ, ધર્મશાળાઓ વગેરે બંધાવી આપણને ઉમદા વારસો અર્પણ કરી ગયા છે,અને તે માટે આપણે સદ્‌ગત શહેરીઓના આભારી છીએ. આવા નામાંકિત ગૃહસ્થોમાં મસાલીયા કુટુંબના નબીરાઓ ખાસ કરીને શેઠ સીરચંદભાઈ, મોહન ટોકરવાળા, હકમચંદ કશળચંદ, ભણસાલી કશળચંદ વચ્છરાજ, શેઠ હીરાચંદ કલ્યાણજી, ગેલાશેઠવાળા, ડામરવોરાવાળા વગેરેની ગણતરી છે.

દાનનો પ્રવાહ બદલવામાં સદ્‌ગત પ્રાતઃ સ્મરણીય શ્રીમાન્ શેઠ મોતીલાલ મુળજી રાધનપુરના ઇતિહાસમાં પ્રથમ સ્થાન ધરાવે છે. વીસ હજારની તે વખતે બાદશાહી ગણાતી રકમ ઉચ્ચ કેળવણી માટે કાઢી આપી, જ્ઞાન પ્રત્યેની પોતાની રસિકતા પુરવાર કરાવવા સાથે રાધનપુરની જનતાને વૈદ્યકીય મદદ મળી શકે તે માટે સારા એન્ડાઉમેન્ટ ફંડ સાથેની ડીસ્પેન્સરી ખોલીને, તથા તેમના સુપુત્રોએ સુવાવડખાનું ખોલીને આખી રાધનપુરી જનતાને ભારે ઉપકાર તળે મુકી છે. શ્રીમાન્ શેઠની ધર્મ પ્રત્યેની શ્રદ્ધા તેટલીજ પ્રશંસાને પાત્ર છે. તેઓએ શ્રી શત્રુંજયનો છરી પાળતો સંઘ તથા ઉદ્યાપન કરી ભક્તિરસમાં પણ ખામી આવવા દીધી નથી. રાધનપુર પાંજરાપોળનું કાયમી ફંડ તથા રાધનપુર જૈન મંડળના પ્રમુખ તરીકે અનેક દિશાઓમાં મદદ કરી પોતાનું નામ રાધનપુરના ઇતિહાસમાં તાજના ઝળકતા જવાહીર તરીકે નોંધાવ્યું છે. શેઠ મોતીલાલ પછી શેઠ હીરાલાલ બકોરદાસ આવે છે. આ શ્રીમાને રાધનપુર ખાતે ભોજનાલય, રાધનપુર પાંજરાપોળ ફંડ, રાધનપુર જૈન મંડળના પ્રમુખ તરીકે અનેકવિધ ફંડોમાં ફાળો, બનારસ યુનીવર્સીટી, પારલા જૈન મંદિર તથા સેનીટરીયમ, શ્રી મહાવીર જૈન વિદ્યાલય, શ્રી તિલક સ્વરાજ્ય ફંડ વગેરે ફંડોમાં સારી રકમો ઉદારતાથી ભરી રાધનપુરી તરીકેનું નામ દીપાવ્યું છે. સદ્‌ગત હીરાભાઈની ભાવના ઘણીજ ઉચ્ચ હતી. ઘણું ઘણું કરવાની હોંશ મારી પાસે વ્યક્ત કરેલી પરંતુ તેવી તક હાથ ધરવામાં આવે તે પહેલાં તેઓ ઝડપાઈ ગયા અને મનની મનમાં રહી ગઈ. તેઓના સુજ્ઞ બંધુ ભાઈ કાન્તિલાલ બકોરદાસ તથા તેઓના પુત્ર ભાઈ અવન્તીલાલ પોતાના પિતાના પગલે ચાલી મરહુમની ઉચ્ચ ભાવના પુરી કરવા મન ઉપર લેશે એવું આપણે ઇચ્છીશું. રાધનપુરનો ઇતિહાસ લખાવાની શરૂઆત કરનાર ઉપરની બન્ને વ્યક્તિઓ પછી મારા પરમ ઉપકારી મિત્ર શ્રીયુત જીવાભાઈ પ્રતાપસી તથા શ્રીયુત ગીરધરલાલ ત્રીકમલાલ આજે પ્રથમ પંક્તિમાં છે. આ બન્ને શેઠીઆઓએ લાખોના ખરચે શ્રી શત્રુંજયતીર્થનો છરી પાળતો સંઘ તથા શ્રી સમેતશિખરજીનો સંઘ કાઢી પ્રભુ ભક્તિમાં પોતાની અચળ શ્રદ્ધા પુરવાર કરી છે. શ્રીયુત જીવાભાઇએ આટલેથીજ નહિ અટકતા રાધનપુર ખાતે રૂપિયા પચાસ હજારના ખરચે આયંબીલ ખાતું સ્થાપ્યું છે જે માટે રાધનપુરની જૈન જનતા તેઓની ઋણી છે. મુંબઇમાં પણ તેઓ અગ્રણી તરીકે કામ કરી રહ્યા છે અને રાધનપુરી તરીકે પોતાની કારકીર્દિ ઝળકતી બનાવવામાં જરાપણ કચાસ રાખી નથી. સ્વ. શેઠ જીવણલાલ કેશરીચંદને પણ આ તકે ભૂલી શકીએ નહિ. તેઓની ભાવનાં પણ ઉચ્ચ હતી, પણ તેઓ જોઇએ તેટલો હાથ લંબાવી શકયા નહિ; છતાં

રાધનપુર ખાતે બાંધવામાં આવેલી ધર્મશાળા તેઓની યાદ હંમેશને માટે આપણા મગજમાં તાજી રાખશે. મરહુમની ઇચ્છા રાધનપુરના મુંબઈમાં વસતા ભાઇઓ માટે સસ્તા ભાડાનાં મકાનો બાંધવાની હતી. પરંતુ તે ઇચ્છા પાર પડી શકી નહિ. આપણે ઇચ્છીશું કે તેઓનાં ધર્મ પત્ની શ્રીમતી તારાબાઈ તથા તેઓના પુત્ર ભાઈ ધીરજલાલ મરહુમનું અધુરૂં રહેલું કાર્ય તથા ભાવના પુરી કરવાનું મન ઉપર લેશે.

પુરુષો ઉપરાંત સ્ત્રીવર્ગ પણ સ્વતંત્ર રીતે ઉદારતા અને સેવાના કાર્યમાં પાછળ નથી. શેઠાણી ગબલીબાઈએ થરાદ મુકામે સ્કુલ બંધાવી આપી હતી અને તે બદલ તેમની સેવાના પીછાણમાં નામદાર હીંદી સરકાર તરફથી કૈસરે હિંદનો મેડલ તેઓને બક્ષવામાં આવ્યો હતો. મુંબઈના તે વખતના નામદાર ગવર્નરે પુના ખાતે ગવર્નરની લેવીમાં તેઓને ખાસ આમંત્રણ આપી બોલાવ્યાં હતાં. અને સદરહુ મેડલથી સ્વર્ગસ્થ શેઠાણીને સુશોભિત કર્યાં હતા. મુંબઈના રાધનપુર જૈન મંડળે પણ તેઓના જાહેર કાર્યની કદર કરી હતી અને મરહુમ સોલીસીટર દમણીયાના પ્રમુખપણા નીચે જાહેર મેળાવડો કરી તેઓને તથા શેઠ મોતીલાલ મુળજીને માનપત્ર તથા કાસકેટ એનાયત કર્યાં હતા.

હવે હું એવા ગૃહસ્થ તરફ દૃષ્ટિ કરૂં છું કે જેઓએ દાનની દિશામાં ક્રાન્તિ યાને રેવોલ્યુશન કરેલ છે. આ ભાઈનું નામ શું આપવાની જરૂર છે? આપણને બહારની દુનિયામાં ઉજળા દેખાડનાર આ ભાઈ તે શ્રીયુત કાન્તિલાલ ઇશ્વરલાલ છે. એઓ ભાઇએ પાંચ માગ્યા ત્યાં પચીસ અને પચાસ માગ્યા ત્યાં લાખ આપ્યા છે. આ બંધુની સખાવતો જગજાહેર હોઇ તે જણાવવાની જરૂર નથી. પરંતુ રાધનપુરની બોર્ડીંગ તથા શ્રી શંકુતલા કાન્તિલાલ ઇશ્વરલાલ કન્યાશાળાનું નામ આપ્યા વિના મને ચાલતું નથી. આ બન્ને સંસ્થાઓને સવા સવા લાખ આપવા છતાં આ ભાઇ હજુ થાકતા નથી અને નાની મોટી કોઈપણ ચીજની જરૂર જણાય તો તે લાભ મારે લેવો જોઇએ એમ કહી કાર્યકર્તાઓને ખૂબ ઉત્તેજીત કરી હોંસભર્યા રાખે છે. શ્રી શંકુતલા કાન્તિલાલ ઇશ્વરલાલ કન્યાશાળા બીલ્ડીંગ હસ્તીમાં આવવામાં મારો થોડો ઘણો પણ હિસ્સો છે અને આજે તેથી હું વધારે મગરૂર છું. હમેશના રીવાજ મુજબ શ્રી માંગરોળ જૈન સભાનો દશેરાનો ઉત્સવ શ્રી કાન્તિલાલ બકોરદાસના પ્રમુખપણા નીચે સર કાવસજી જહાંગીર હોલમાં ઉજવવામાં આવ્યો હતો. જે પ્રસંગે સંસ્થાને મકાનની જરૂરીયાત ઉપર સભાજનોનું ધ્યાન ખેંચવામાં આવ્યું હતું. વળતેજ દીવસે શ્રીયુત કાન્તિભાઇને હું મળ્યો અને આ યશ આપે લેવો એવી મેં તેમને વિનંતી કરી. મને ટુંક વખતમાંજ ખબર મળી કે શ્રીયુત કાન્તિલાલ ઇશ્વરલાલે મોટી રકમની ઑફર આ કાર્ય માટે સંસ્થાના વહીવટકર્તાઓ પાસે મુકી છે. સારા નસીબે તેઓની આ ઓફર સ્વીકારવામાં આવી, જેના પરિણામે તેઓનો કીર્તિસ્થંભ આ મંડપની તુરતજ પાછળ કવીન્સ રોડ ઉપર તૈયાર થયો છે. અને ટુંક વખતમાં તે ખુલ્લો મુકાયલો જાહેર કરવામાં આવશે. આપણે આશા રાખીશું કે શ્રીયુત કાન્તિભાઈ પોતાની સખાવતનો ઝરો ન્યાતજાતના ભેદભાવ વગર મનુષ્ય જાતના ઉપયોગ માટે સદાને માટે ખુલ્લો રાખશે અને રાધનપુરીના તાજમાં અનેક કલગીઓનો ઉમેરો કરશે.

સેવાની બાબતમાં રાધનપુર જૈન મંડળના આદ્ય પ્રમુખ શેઠ હરગોવિંદદાસ પુનમચંદ, ગુજરાતી મંડળીના પ્રમુખ તથા શેરબજારના ડીરેકટર સ્વ. શેઠ વાડીલાલ પુનમચંદ તથા રાધનપુરના ગ્રાન્ડ ઓલ્ડ મેન તરીકે જાણીતા થયેલા શેઠ ચુનીલાલ વીરચંદના નામોનો

ઉલ્લેખ ન કરૂં તો આજના પ્રસંગને મેં અન્યાય કર્યો કહેવાય. આનો જાહેર નામો છે. બીજા અનેક ભાઇઓ જેઓએ ગુપ્ત અથવા જાહેર રીતે જ્ઞાન દર્શન અને ચારિત્રની ભાવનાને અંગે, સ્વામીભાઇઓની ભક્તિને અંગે, નાની મોટી રકમો રાધનપુર તથા મુંબઈ ખાતે વાપરી છે. તે બધા ભાઇઓ આપણા અભિનંદનને યોગ્ય છે.

રાધનપુરનો આટલો ટુંક ઇતિહાસ રજુ કર્યા પછી હું આજના વિષય ઉપર આવું છું. ઉપર જણાવેલા ભાઇઓને પગલે ફુલ નહિ તો ફુલની પાખડી સેવા ભાવે અર્પવા અમો બન્નેને ઉલ્લાસ થયો છે. શ્રીયુત ગીરધરભાઇને હાર્ટ એટેક થયો ત્યારે વ્યવહારૂ રીતે એમ જણાયું કે તેઓએ કંઇક સખાવત કરવી જોઇએ. શ્રીયુત ગીરધરભાઇના એક સ્નેહી તરીકે મને પણ સૂચના કરવામાં આવી, પરંતુ શ્રીયુત ગીરધરભાઇની એવી સ્થિતિમાં મારી જીભ કેમ ઉપડે એજ સવાલ હતો. મને એટલો સંતોષ હતો કે શ્રીયુત ગીરધરભાઇએ પોતાના હાથે ગુપ્ત મદદમાં તેમજ બીજા ધાર્મિક કાર્યોમાં લાખો રૂપિયા ખર્ચ્યા છે. એટલે તેઓને લગાર સારૂં થાય તો વાત કરૂં. સારા નસીબે તેઓનો હાર્ટ એટેક હળવો પડયો, અને તેઓશ્રીને વિનંતી કરવાની તક મને સાંપડી. ગીરધરલાલ તમો લાખો રળ્યા છો અને લાખો તમોએ ખરચ્યા છે, પરંતુ એક એવું ખાતું આપે ઉભું કર્યું નથી કે જે કાયમને માટે આપની યાદ તાજી રાખે, મેં તેઓની પાસે પચાસ હજારની માગણી કરી ગીરધરલાલે શું જવાબ આપ્યો? તેઓએ જે જવાબ આપ્યો તેથી મારે તો શરમાઈ જવું પડયું. કકલભાઈ પચાસ હજારમાં કંઈ થાય નહિ, લાખ તો ઓછામાં ઓછા જોઇએ અને તેટલી રકમનું ટ્રસ્ટ કરી સોંપવા મેં ધીરજને સૂચના કરેલ છે. આપ જાણીને ખુશી થશો કે શ્રીયુત ગીરધરલાલે આજના શુભ પ્રસંગની યાદમાં તે રકમ આપવાનું અને તેનો ઉપયોગ જરૂરીયાતવાળા આપણા ભાઇઓને જીવનનિર્વાહનાં સાધનો, જ્ઞાનના સાધનો તથા વૈદકીય મદદ આપવામાં કરવા નક્કી કર્યું છે. ટ્રસ્ટની વીગતો હવે પછી નક્કી કરવામાં આવશે.

શ્રીયુત ગીરધરલાલના આવા ઉદાર જવાબથી મને પણ કંઇક લાભ ઉઠાવવાની પ્રેરણા થઈ; આખરે મારી નસોમાં પણ રાધનપુરીનું લોહી વહે છે. મારી ઉંમર પણ પંચાવન વરસની થવા આવી છે. કોણે જાણ્યું કે કાલે શું થશે તેથી જેટલો લાભ જલ્દીથી લઈ લેવાય તેટલો કામનો, જે ઉદ્દેશથી ભાઈ ગીરધરલાલે ટ્રસ્ટ કરવાનું નક્કી કર્યું છે તેજ ઉદ્દેશથી હું પણ રૂપિયા પચાસ હજારનું ટ્રસ્ટ આજના અમારા નવીન ગૃહના વાસ્તુ પ્રસંગની ખુશાલીમાં કરી આપવાનું માથે લઉ છું. આ રકમ આસ્તે આસ્તે વધારવાની મારી ભાવના છે. પ્રભુ તેમ કરવાની મને સદ્‌બુદ્ધિ આપે.

નિવેદનના અંતે રૂ. ૧૦૫૦૦૧) પારેખ જીવણલાલ કેશરીચંદના સુપુત્ર ધિરજલાલ રૂ. ૧૦૦૦૦૦) કોઠારી ગીરધરલાલ ત્રીકમલાલ, અને રૂ. ૫૦૦૦૦) વકીલ કકલભાઈ ભુદરદાસે સખાવત જાહેર કરી, હરેકે પોતપોતાનુ ઇલાયદુ ટ્રસ્ટ બનાવી તેનો ઉપયોગ રાધનપુરીઓના જીવનનિર્વાહ, જ્ઞાન, અને વૈદ્યકીય સાધનોની મદદ આપવામાં કરવાનું નક્કી કરેલ છે. આ આખુ નિવેદન રાધનપુરીઓની પરંપરાથી ઉતરી આવેલી ઉદારતાનો ખ્યાલ આપે છે. રાધનપુરીઓ સદાય આથી પણ અધિક ઉદાર બની દુનિયામાં રાધનપુરનો ગૌરવ ભરેલો કીર્તિધ્વજ ફરકાવે એ સુભેચ્છા.

આ તકે ધનિકોના હૃદય ઉપર પ્રકાશ પાડવો ઉચિત જણાતાં, દોરવણી આપીએ છીએ કે રાધનપુરીઓની સખાવતોની દશેક લાખથી વધુ સ્થાયિ રકમો ભિન્નભિન્ન ગૃહસ્થોના હાથમાં છે. તેઓને તે રકમનું વ્યાજ ઉપજાવવું પણ ભારે અને જોખમી પડે છે. તો તેના બદલે સસ્તા ભાડાની મુંબાઇમાં ચાલીઓ બંધાવી તે દ્વારા વ્યાજ ઉપજાવાય, તો રાધનપુરી બંધુઓને રાહત આપવા સાથે રકમ સ્થાયિ બની જશે. અને વ્યાજ ઉપજાવવાની જોખમી જવાબદારી ઓછી થશે.

ઉપધાન-તપ માળા પરિધાન મહોત્સવ.

અનુયોગાચાર્ય પં. શ્રી શાન્તિવિજયજી ગણિવર્યના ઉપદેશામૃતના સિંચનથી શા. વાડીલાલ છગનલાલ અને શા. સાંકળચંદ ઘેલાભાઈ તરફથી ભગુભાઇના વંડે ઉપધાન શરૂ કરાવી, સં. ૧૯૯૭ના આસો શુદિ ૧૦ અને આસો શુદિ ૧૪ એમ બે મુહૂર્તોએ નાણુ મંડાવી, ઉપધાન-તપ પ્રવેશની ક્રિયા કરાવતાં, સવાસેક પુરૂષ, સ્ત્રી, અને કુમારિકાઓ સહિત પ્રવેશ કરેલ. જે પૈકી ૫૩ માળાપહેરનારા હતાં.

પન્યાસ પ્રવર દરરોજ તપની પુષ્ટી પર વ્યાખ્યાન આપતાં, તેમજ મુનિ સુભદ્રવિજયજી નવ-સ્મરણાદિ સ્તોત્ર સંભળાવતા હોવાથી, તપની આરાધના નિર્વિઘ્ને શાન્તિપૂર્વક સમાપ્તિ થયા બાદ, સૌ સૌના સ્થાને વેરાતા પહેલાં હરેકને ઉપધાન-તપ વહેરાવનારા તરફથી એકાસણુ-બેસણા કરાવવા, સાથે શા. વાડીલાલ છગનલાલ તરફથી ટીલાવીને રૂપીઆ સાથે શ્રીફળ આપવામાં આવ્યાં હતાં.

કારતક વદિ ૫ ના માળાની ઉછામણી બોલાવવાનું શરૂ કરતાં લોકોમાં અનહદ ઉત્સાહ હોવાથી માત્ર બેજ કલાકમાં ઉછામણી સંપૂર્ણ થવા સાથે હઠીભાઇની વાડી કરતાં ઓછી માળાઓ હોવા છતાં આસરે છએક હજારની ઉપજ થયેલ છે. અને દ્વિત્ય માળા રૂ. ૮૦૧) ની ઉછામણીથી પરિધાન કરનાર શા. શાન્તિલાલ ઇશ્વરલાલના અ. સૌ. સહચારિણી હીરા બ્હેન હતાં.

ઉપધાનની સામુદાયિક ટીપો (જેવી કે જીવદયા, અષ્ટાહ્નીકા મહોત્સવ અને ઉપગરણાદિ વહેંચવાની) સારા પ્રમાણમાં થવા સાથે આરાધકોને એક ચાંદીની ડબી, ત્રણ ચાંદીની વાટકીઓ, પટ્ટાવળી, અને શ્રીપાલચરિત્ર આદિની લ્હાણીઓ આપવામાં આવી હતી.

માગસર સુદિ ૫ ના બપોરના માળાનો વરઘોડો ધનાસુતારની પોળથી કાઢવામાં આવેલ, જેની ગોઠવણીની વ્યવસ્થા લાવરીની પોળના ઉત્સાહિ બંધુઓએ ઘણીજ સુંદર રીતે કરી હતી. વરઘોડામાં હાથી, ચાર અને ત્રણ ઘોડાઓની ગાડીઓ ઉપરાંત ફુલોથી સણગારેલી બગીઓ અને મોટરોમાં બેઠેલા સાંબેલાઓ જનતાનું લક્ષ ખેંચી રહ્યા હતા. તેમજ શ્રમણ અને શ્રાવક સમુદાયનું જુથ પણ અનેરી શોભા અર્પી રહ્યુ હતું.

વરઘોડો ધનાસુતારની પોળથી શરૂ થઈ કાલુપુર, ઢીંકવાચોકી, રીચીરોડ, માણેકચોક, ઝવેરીનોચોરો, સોના-ચાંદી બજાર, ચાંદલાઓળ, કંદોઈઓળ, થઇ સડક ઉપર ચઢી પાનકોરનાકા અને ઢાલગરવાડામાં થઈ ભગુભાઈના વંડે ઉતર્યો હતો. જ્યાં માળાઓ અને પૂજાદિના ઉપગરણો, ફળ, નૈવેદ્ય, આદિની છાબો લઈ લેવામાં આવી હતી.

વરઘોડાના પાછળના ભાગમાં પ્રભુના ચાંદીના બે રથો અને તેની પાછળ આભૂષણો અને રંગબેરંગી જરિયન સાડીઓથી સુસજ્જ થયેલી નારીઓનું વૃંદ, હાથમાં ચાંદીના લામણ-દીવડા અને જરિયન રૂમાલોથી વિભૂષિત માથા ઉપર છાબો ઉપાડીને ચાલતાં ટોળે ટોળાં, જાણે રાજનગરની સમૃદ્ધિ અહીંઆંજ ખીલી ન નીકળી હોય તેમ દેખાતું હતું. રાજનગરની જનતા એકી અવાજે કહેતી હતી કે કાલના વરઘોડા કરતાં આજની વ્યવસ્થા અને શોભા અનેરી છે. તેમજ તે દિને રાત્રે ભગુભાઈના વંડે માળાઓનું રાત્રી જાગરણ કરવામાં આવતાં શ્રીફળની પ્રભાવના કરવામાં આવી હતી, અને પન્યાસ પ્રવરે માળાઓ મંત્રી હતી.

માગસર સુદિ ૬ ના ત્રીજા પહોરના માળા પરિધાન મહોત્સવ હોવાથી માળા પહેરનારાઓના કૌટુંબીજનોના જુથો, વ્હેલી પ્રભાતથી ભગુભાઈના વંડે આવતાં, વંડો ચીકાર ભરાઈ ગયો હતો. પન્યાસજીએ સવાનવના અમલે નાણ સન્મુખ ક્રીયા કરાવવાનો પ્રારંભ કરી, તેની સમાપ્તિ અંતે પ્રથમ માળ શા. વાડીલાલ છગનલાલના અ. સૌ. સમરત બ્હેનને પહેરાવવા સવાદશના સમયે તેમના બંધુને આપતાં, તેમણે વાજીંત્રોના સરોદોના ગુંજારવમાં પહેરાવ્યા બાદ ક્રમવાર એક પછી એક ઉછામણીવાળાઓએ માળ પહેરાવવા માંડી, જે માળારોપણ વિધિ સાડા અગિયાર વાગે પૂરી થતાં, અનેક બેન્ડો સહિત મુનિ મંડળ સાથે સકળ સંઘ સમેતશીખરજીની પોળના જિનાલયે દર્શન કરી, સૌ પોતપોતાના સ્થળે વાજીંત્રો સાથે વીખરાયા હતાં.

સમુદાયની ટીપમાંથી ડહેલાના ઉપાશ્રયે માગસર સુદિ ૪ થી અષ્ટાહનીકા-મહોત્સવનું મંડાળ કરી, મેરૂ પર્વત અને સમોસરણની રચના કરાવી, દરરોજ જુદાજુદા પ્રકારની રાગરાગણીવાળી પૂજાઓ વાજીંત્રોના મધુર નાદો સાથે ભણ.-વવા, ઉપરાંત નવનવા પ્રકારની પ્રભુને અંગરચનાઓ કરાવવામાં આવે છે. આ મહોત્સવમાં અષ્ટોતરી સ્નાત્ર મહાપૂજા કરવાની હોઈ માગસર સુદિ ૧૦ કુંભ સ્થાપના તથા નવગ્રહ પૂજન અને માગસર સુદિ ૧૩ ના ઘણાજ આડંબરથી મહાપુજા ભણાવવામાં આવી હતી. આ પ્રસંગે ડહેલાના ઉપાશ્રય અને સરિયામના રસ્તાને ધ્વજો અને ઇલેકટ્રીક લાઇટોથી સણગારી નભોમંડળ જેવું બનાવી દીધેલ હતું. વળી તે દિને હજારેકના સમુદાયને જમાડવામાં આવ્યા હતાં.

ઉપધાનના કાર્યના પ્રારંભથી તે અંત સુધિ ખડા પગે ઉભા રહીને પારેખ

મંગળદાસ નગીનદાસ, શા. વાડીલાલ છગનલાલ, શા. ઘેલાભાઈ સુળચંદ અને શા. ભોળાભાઈ મોહનલાલ આદિ સજ્જનોએ જે સેવા અર્પણ કરેલ છે, તે બદલ તેમને ધન્યવાદ ઘટે છે.

વર્તમાન- માચાર

सादडी જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયનીતિસૂરિજી મહારાજ શિષ્ય સમુદાય સાથે, ચિતોડગઢના જિનાલયોની મહા સુદિ ૨ ની પ્રતિષ્ઠા હોવાથી, ઉદેપુરના સંઘની અતિ આગ્રહભરી વિજ્ઞપ્તિથી માગશર શુદિ ૫ ના અહીંઆંથી વિહાર કરી, ઘાણેરાવ, કેરવાડા થઈ માગશર વદિ ૩ આસપાસ ઉદેપુર પહોંચશે.

बीयावर ઉપાધ્યાય શ્રી દયાવિજયજી મહારાજના સદુપદેશથી થયેલ ઉપધાનની માળા પરિધાન કરાવવાનું મુહૂર્ત માગશર શુદિ ૬ નુ હોવાથી, માગશર શુદિ ૫ ના ઘણાજ આડંબરપૂર્વક માળાનો વરઘોડો શેઠ શંકરલાલજી મૂણોતના મકાનેથી ચઢી, આખા શહેરમાં ફરી દેરાશરે ઉતર્યો હતો. અને માગશર શુદિ ૬ ના ત્રીજા પહોરે માળા પરિધાનની વિધિ સકળ સંઘ સન્મુખ નાણ મંડાવીને વાજીંત્રોના નાદો વચ્ચે કરાવવામાં આવી હતી. આ પ્રસંગે અષ્ટાહનીકા મહોત્સવ અને સ્વામી વાત્સલ્ય ઘણીજ હોંશથી સારી રીતે કર્યા હતા. વળી શેઠ શંકરલાલ મૂણોત તરફથી માગશર શુદિ ૧૦ ના કાપરડાજીનો સંઘ કાઢવામાં આવેલ, જેમાં આસરે ત્રણસોકનો સમૂહ હતો.

जामनगर પન્યાસ માનવિજયજી મહારાજના ઉપદેશથી, થયેલ ઉપધાનની માળા પરિધાન કરાવવાનું મુહૂર્ત માગશર શુદિ ૧૦ નુ હોવાથી, માગશર શુદિ ૯ ના ઘણાજ ઠાઠમાઠથી માળાનો વરઘોડો ચઢાવવામાં આવેલ. અને માગશર શુદિ ૧૦ ના મંગળ પ્રભાતે માળા પરિધાનની વિધિ સકળ સંઘ સન્મુખ નાણ મંડાવીને, વાજીંત્રોના નાદો વચ્ચે કરાવવામાં આવી હતી. આ પ્રસંગે અષ્ટાહનીકા મહોત્સવ અને શાન્તિ સ્નાત્ર, પ્રભાવના આદિ ઘણાજ શાસન પ્રભાવનાના કાર્યો થયા હતાં

पाटण જૈનાચાર્ય શ્રી વિજયલાવણ્યસૂરિજી મહારાજ શિષ્ય પરિવાર સાથે રાધનપુરથી કારતક વદિ ૪ ના વિહાર કરી વારાહિ, સંખેશ્વર, હારીજ આદિ સ્થળોએ રોકાતાં રોકાતાં માગશર શુદિ ૧૫ ના પાટણમાં ઘણાજ આડંબરપૂર્વકના સામૈયાથી પ્રવેશ કરેલ છે.

प्रतापगढ પન્યાસજી શ્રી કલ્યાણવિજયજી મહારાજના ઉપદેશામૃતના સિંચનથી, ગુમાનજીના મંદિરનો ધ્વજદંડ ચઢાવવાનું નકી થવાથી, માગશર સુદિ ૩ થી ધ્વજદંડ અને અષ્ટાહનીકા મહોત્સવ દાવડા ખેમરાજજી મગનલાલજીના ધર્મપત્ની શ્રીમતિ ઝમકુ બ્હેન તરફથી પ્રારંભ થતા, દરરોજ જુદાજુદા પ્રકારની રાગરાગણીઓથી ભરપુર પૂજાઓ ભણાવી, નવનવા પ્રકારની પ્રભુજીને અંગરચના

કરાવવામાં આવતી હતી. ઉપરાંત માગશર શુદિ ૬ કુંભ સ્થાપના શુદિ ૮ નવગ્રહ પૂજન, શુદિ ૯ દંડ અભિષેક શુદિ ૧૦ ધ્વજ દંડારોપણ, શાન્તિ સ્નાત્ર, શુદિ ૧૧ સમાપ્તિનો વરઘોડો અને અનેક પ્રભાવનાઓ આદિ શાશન પ્રભાવનાના કાર્યો ઘણાજ ઉમંગ અને ઉત્સાહથી થયા હતાં. પન્યાસજી મગશર શુદિ ૧૩ ના વિહાર કરી કેશરીયાજી થઇ ચિતોડગઢ તરફ જવા સંભવ છે.

રાધનપુર પ.પૂ. જી શ્રીલાભવિજયજી ગણિવર્યના વરદ હસ્તે, માગશાર શુદિ ૬ ના મુનિશ્રી વિકાસવિજયજી ગણિવર્યને પન્યાસપદારોપણ સકળ સંઘ સમક્ષ સાગરના ઉપાશ્રયે નાણુ મંડાવીને આપવામાં આવ્યુ હતું. આ પ્રસંગે પ્રભાવનાઓ અને આદેશ્વરજી અષ્ટાહનીકા મહોત્સવ, ઉત્સાહથી ભીન્નભીન્ન વ્યક્તિઓ તરફથી કરી આ માંગળિક મહોત્સવ અદ્વિતીય રીતે ઉજવાયો હતો.

અંધેરી શેઠ માણેકલાલ ચુનીલાલ તરફથી થનાર ઉપધાન-તપના આરાધકોની ઉત્તમ પ્રકારે અનુકુળતા સચવાય એ હેતુથી, શેઠ કરમચંદ જૈન પોષધ-શાળા પાસે આવેલ પોતાની જગ્યામાં વિશાળ મંડપ બાંધી, જુદાજુદા વિભાગો યોજી, સુંદર વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. શ્રીશત્રુંજ્ય, શ્રીપાવાપુરીજી, શ્રીરાજગૃહી, ત્રિશલામાતાના ચૌદસુપનો, પ્રભુનું સમવસરણ આદિ આકર્ષક અને રંગબેરંગી રચનાઓ તૈયાર થઈ રહી છે. વચમાં શિખરબંધી દેરાસરનું કામ ચાલુ છે. ધાર્મિક ક્રિયા, વ્યાખ્યાન, સયન, ભોજન, વિ. અંગે જુદાજુદા વિભાગો પાડી અદ્વિતીય ગોઠવણ કરેલ છે. આ મહોત્સવથી સ્થાનિક સંઘમાં ભારે ઉત્સાહ વ્યાપી રહ્યો છે. માગશર શુદિ ૯ ના પ્રથમ પ્રવેશદિને અસંખ્ય આગેવાનો અને સમૂહ વચ્ચે નાણુથી ક્રીયા કરાવતાં આસરે ૨૦૦ પુરૂષ અને ૪૦૦ નારિઓએ તપની આરાધનામાં પ્રવેશ કરેલ છે.

જૈન પ્રભુની મૂર્તિઓના અંજનસલાકા દિનને રાજ્ય તરફથી કાયમી ઉજવવાનો **મુલી ઠાકોર સાહેબે** કરેલો હુકમ.

મુલી ઠાકોર સાહેબ શ્રી હરીશ્ચંદ્રસીંહજીએ હ. ઓ. ન. ૪૯૫૪ તા. ૧૮-૧૧-૧૯૪૧ થી હરેક વર્ષે માગશર શુદિ ૪ ના જૈનાચાર્ય માણેકસાગરસુરિજીના વરદ રસ્તે અંજનશલાકા કરાયેલ મંદિરમાં પ્રભુ આંગી રચાવવા અને પૂજા ભણાવવા રૂ. ૧૨) ટ્રેઝરરી ઓફીસરે તેજ દિને આપવા, તેમજ તે દિનને જાહેર તહેવાર ગણિ સ્ટેટની તમામ શાળા અને કચેરીઓમાં રજા પાળવા, અને સ્ટેટની હદમાં શિકાર નહિ કરવા, હુકમ કરી તેની એકેક નકલ આચાર્ય મહારાજ અને મુલીના સંઘને આપવા પોતાની અને કારભારીઓની સહિઓથીફરમાવેલ છે.

મુદ્રક.-**હીરાલાલ દેવચંદ શાહ.** 'શારદા મુદ્રણાલય." જુમામસ્જીદ સામે-**અમદાવાદ**
પ્રકાશકઃ-**ભોગીલાલ સાંકળચંદ શેઠ. "જૈનધર્મ વિકાસ"** ઓફિસ જૈનાચાર્યશ્રી વિજયનીતિસૂરીશ્વરજી વાંચનાલય. ૫૬/૧ ગાંધીરોડ-**અમદાવાદ.**

વાંચકોને !

માસિકના નમુનાનો અંક આપને મોકલવામાં આવે છે. આપશ્રીને અવલોકન કરતાં જો એ સંતોષ આપવામાં સફળ નીવડે તો આશા છે કે, વાર્ષિક લવાજમ સ્થાનિકના રૂા. ૨-૦-૦ અને બહારગામના (પોસ્ટેજ સાથે) રૂા. ૨-૯-૦ મોકલી આપશ્રી માસિકના ગ્રાહક તરીકે નામ નોંધાવશો.

લવાજમ મોડામાં મોડા આવતી સુદિ ૧ સુધી મોકલી આપશો. કે જેથી વી. પી. થી મોકલતાં વધુ ખર્ચ ન થાય, છતાં જણાવશો તો વી. પી. કરવામાં આવશે.

ગામ પરગામ વિચરતા પૂજ્ય મુનિવરો માસિકનો પ્રચાર કરી, નવા વાંચનરસિક ગ્રાહકો નોંધાવી, માસિકને પ્રોત્સાહન આપશે, એવી અમે આશા રાખીએ છીએ.

કોઇ પણ સામાજીક સંસ્થાઓ કે પૂજ્ય મુનિગણને અમો, મફત કે ઓછા દરથી માસિક આપી શકીએ તેમ નથી, એ સૂચન થાય.

નમુનાની નકલ મંગાવવાથી મોકલી આપવામાં આવશે. "તંત્રી"

ગ્રાહકોને ખાસ લાભ

દર માસની વદિ પંચમીએ નિયમિત પૃ. ૩૨ નું વાંચન. વાર્ષિક લવાજમ સ્થાનિકના રૂા. ૨-૦-૦ અને બહારગામના રૂા. ૨-૯-૦ (પોસ્ટેજ સાથે)થી પુરૂ પાડવા, ઉપરાંત આકર્ષક પુસ્તકો ભેટ આપવામાં આવશે.

શ્રી સમસ્ત જૈન સંઘને જાહેર વિજ્ઞપ્તિ.

મારવાડ પ્રાન્તના **શિરોહિમાં** મુનિ હર્ષવિમલજી, **સાચોરમાં** મુનિ કલ્યાણવિમલજી ઉર્ફે સદાનંદજી અને પાલણપુર તાબાના **બસુમાં** મુનિ માણેકવિમલજી, એ ત્રણે સાધુઓ શ્રીવિમલગચ્છના સંઘાડાનાં પન્યાસ શ્રીહિમતવિમલજી ગણિવર્યના પ્રશિષ્યો હોઇ, ધર્મ વિરૂદ્ધ વર્તનથી ગુરૂદેવના નામને કલંકીત કરતા હોવાથી, ગુરૂદેવના ફરમાનથી, તેમને સંવત ૧૯૯૮ના માગશર શુદિ ૫ થી શ્રીવિમલગચ્છના સંઘાડા બહાર કરવામાં આવે છે. માટે તેમની સાથે અમારા સમુદાયના તે સાધુઓ છે, તેમ સમજી વ્યવહાર કોઇએ રાખવો નહિ. તા. ૧૮-૧૧-૪૧

લી. શ્રી રત્નવિમલજી મહારાજ.
ડાયરાના સંવેગી ઉપાશ્રય મુ. પાલણપુર

તપાગચ્છ પટ્ટાવલી

સાહિત્યરસિક જનતાને ખાસ તક

ઉપાધ્યાય શ્રીમદ્ ધર્મસાગરજી વિરચિત—

તપાગચ્છ પટ્ટાવલી:—સંપાદક, પ૦ શ્રી કલ્યાણવિજયજી મહારાજ. છપાઇને તૈયાર થઇ પ્રસિદ્ધ થઇ ચુકેલ છે, આ ગ્રંથમાં પ્રભુશ્રી મહાવીરદેવની પાટપરંપરાએ થયેલા આચાર્યાદિ સાથે શાસનપ્રસિદ્ધ અન્ય મહાપુરૂષોનું ઐતિહાસિક દ્રષ્ટીએ ઉપયોગી સાહિત્ય આપવામાં આવ્યું છે.

ક્રાઉન આઠ પેજી ૩૫૦ પૃષ્ઠના, શોભિત ફોટાઓ, અને પાકુ પુંઠું (જેકેટ) સાથેના આ ગ્રંથનું મુલ્ય માત્ર રૂા. ૧-૮-૦. પોસ્ટેજ જુદું

લખો—જૈન ધર્મ વિકાસ ઓફિસ, ૫૬૧ ગાંધી રોડ, **અમદાવાદ.**

જાહેર ખબર આપનારાઓને

જૈન સમાજને ગામડે ગામડે આ નવા માસિકનો પ્રચાર થશે, અને એથી જાહેર ખબર આપનારાઓ પોતાના પ્રચારનો સંદેશ દૂર દૂર પહોંચાડી શકશે.

માસિક નિયમિત પ્રગટ થતુ હોવાથી જાહેર ખબર આપનારાઓને આ તકનો લાભ લેવા આમંત્રણ આપીએ છીએ, ભાવ નીચે મુજબ.

પૃષ્ઠ	બારમાસ	નવમાસ	છમાસ	ત્રણમાસ	એકમાસ
૧	૪૦	૩૨	૨૪	૧૪	૬
૦ાા	૨૫	૨૦	૧૫	૯	૪
૦ા	૧૫	૧૨ાા	૧૦	૭ાા	૨ાા

એક વખત ટુંકી જાહેરાતના કોલમની બે લાઇન યા તેના ભાગનો રૂા. ૧)

અંક સાથે છપાવેલ તૈયાર હેન્ડબીલની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂા. ૧૫)

અંક સાથે છપાવેલા તૈયાર દરેક તોલા અઢી યા તે વજનના કોઇ પણ ભાગના સૂચિપત્રની માત્ર વહેંચામણીના એક વખતના રૂા. ૩૦)

સરતો-(૧) નાણુા અગાઉથી લેવામાં આવશે. (૨) જાહેર ખબર લેવી યા ન લેવી એ તંત્રીની મરજી ઉપર રહેશે. (૩) જાહેરાત પાછી મોકલાશે નહિ.

વધુ ખુલાસા માટે પત્રવ્યવહાર યા પુછપરછ નીચેના શરનામે કરો.

"જૈન ધર્મ વિકાસ" ઓફીસ ૫૬/૧ ગાંધીરોડ, અમદાવાદ.

બહાર પડી ચૂકેલ છે.

શબ્દરત્નમહોદધિ શબ્દકોષ ભાગ ૨ જો.

સંગ્રાહક, પન્યાસજી શ્રીમુક્તિવિજયજી.

સંસ્કૃત ભાષા સરળ રીતે બાળજીવો સમજી દરેક જૈન અજૈન ગ્રંથોનું વાસ્તવિક અર્થ સ્વરૂપ સમજી શકે, તેવી પદ્ધતિએ જૈનાચાર્ય શ્રીવિજયનીતિ સુરીશ્વરજી મહારાજની કોષ બનાવી, તેનું પ્રકાશન કરાવી, જનતાને તેનો લાભ લેતા કરવાની મહેચ્છા હતી, તે બાર વર્ષની મહેનતે આજે પરિપૂર્ણ થવા પામેલ છે.

આવા અલભ્ય કોષના બે ભાગો, ક્રાઉન આઠ પેજી એકંદર ૧૮૦૦ પૃષ્ઠના, ગુરૂવર્યોના શોભિત ફોટાઓ અને પાકા પુંઠાં સાથેના આ ગ્રંથના પહેલા ભાગના રૂા. ૮-૦-૦, અને બીજા ભાગના રૂા. ૧૦-૦-૦ પોસ્ટેજ જુદું રાખવામાં આવેલ છે.

પહેલો ભાગ મેળવનારાઓએ બીજો ભાગ પોષ માસમાં બાઇડીંગ થઇ જવાથી મંગાવી લેવા ધ્યાનમાં રાખવું.

બન્ને ભાગના એકીસાથે પાંચ સટ લેનારને પંદર ટકા કમીશન આપવામાં આવશે.

લખો.—શ્રીવિજયનીતિસુરિજી જૈન લાયબ્રેરી, ૫૬/૧ ગાંધીરોડ, અમદાવાદ

બુકસેલર મેઘજી હીરજી ગોડીજીની ચાલ, પાયધુની-મુંબઇ.

ટાઇટલ છાપનાર : શ્રીશારદા મુદ્રણાલય, પાનકોરનાકા, જુમામસીદ સામે-અમદાવાદ.